पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाऊस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली-110 008

मुख्य संरक्षक

श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री जी. एस. बिन्द्रा
मुख्य महाप्रबंधक

मुख्य संपादक

श्री आर. सी. नारायण
महाप्रबंधक

संपादक व प्रकाशक

डॉ. चरनजीत सिंह
मुख्य प्रबंधक
प्रभारी राजभाषा

संपादक मंडल

श्री कंवर अशोक
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

श्री हिमांशु राय, श्रीमती शिल्पी सिन्हा
राजभाषा अधिकारी

श्री सोनी कुमार, सुश्री मोनिका गुप्ता
राजभाषा अधिकारी

विशेष आभार : सरदार मक्खन सिंह
सेवानिवृत उप महाप्रबंधक

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

राजभाषा अंकुर में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
8/39, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 फोन : 98100 87743

अप्रैल-जून
2013

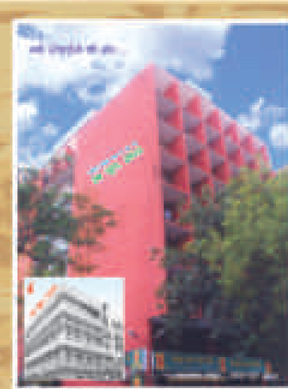

विषय-सूची

1.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय की कलम से	2
2.	कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश	3
3.	संदेश	4
4.	संपादकीय	6
5.	अर्थ-जगत में एक नया इतिहास	7
6.	बैंक का गौरवमयी इतिहास	8
7.	डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी का अनूठा योगदान	15
8.	बैंकिंग उद्योग को पंजाब एण्ड सिंध बैंक की देन	20
9.	बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (1908-2013)	21
10.	स्वर्णिम यादें	22
11.	यादों के झरोखे से....	24
12.	बैंक का भक्ति संगीत संग्रहालय	26
13.	बैंक द्वारा आयोजित कीर्तन दरबार	28
14.	गुरुद्वारा बंगला साहिब के प्रांगण में बैंक द्वारा हर वर्ष लगाई जाने वाली चित्र - पुस्तक प्रदर्शनियाँ	30
15.	बैंक द्वारा संचित सिख सांस्कृतिक धरोहर (चित्रों के माध्यम से)	32
16.	बैंक द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर	34
17.	प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित गुरु-पर्व	35
18.	विशिष्ट उपलब्धियाँ	36
19.	बैंक द्वारा प्रकाशित सचित्र गुरु गाथाएं	38
20.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक -ग्रामीण स्व-रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान प्रशिक्षण एवं ऋण-वितरण	39
21.	बैंक के सतर्कता अधिकारियों हेतु सी.बी.आर.टी... चण्डीगढ़ में एक दिवसीय कार्यशाला	40
22.	बैंक इतिहास का एक और स्वर्णिम अध्याय	41
23.	राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित बैंक के हॉकी खिलाड़ी/कोच	42
24.	खेल जगत को बैंक की देन-ओलंपियंस/ खेल-जगत में बैंक की उपलब्धियाँ	43

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय की कलम से

प्रिय साथियो,

राजभाषा अंकुर का वर्तमान अंक बैंक की विकास-यात्रा को ध्यान में रखकर प्रकाशित किया जा रहा है। निश्चित रूप से 'अंकुर' नई पीढ़ी को बैंक के स्वर्णिम इतिहास से परिचित कराएगा, इसकी मजबूत नींव डालने वाले तथा कालान्तर इसे सजा-संवार कर नया एवं वर्तमान रूप देने वाले दूरदर्शियों से परिचित कराएगा। इस अंक में बैंक के संस्थापकों के परिचय से लेकर बैंक की उपलब्धियों तथा बैंक द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों आदि के बारे में पाठकों को रूबरू कराने का प्रयास किया गया है।

यदि हम सन् 1908 की बैंकिंग की तुलना 21वीं सदी की बैंकिंग से करें तो आमूल-चूल परिवर्तन पाएंगे। पहले बैंकिंग मैनुअल होती थी, आज पेपरलैस बैंकिंग, प्लास्टिक मनी और मोबाईल बैंकिंग चल रही है।

अनेकों दार्शनिकों, महापुरुषों के अनुसार हर व्यक्ति को वर्तमान में जीना चाहिए, लेकिन उसे अपने वर्तमान के साथ-साथ भूतकाल एवं भविष्य को भी याद रखना चाहिए, क्योंकि भूतकाल में हमारे साथ जो गलत हुआ है, वर्तमान में उसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए और यदि अच्छा हुआ है तो हमें उसे उत्तम बनाते हुए अपने भविष्य को स्वर्णिम बनाना है। हमारे पूर्वजों ने एक सदी पहले जो बीज बोया था, वह आज एक विशाल फल वृक्ष बनकर हमारे समक्ष उपस्थित है, जिसके उत्पादन से हमारे हज़ारों सदस्य तो अपनी आजीविका चला ही रहे हैं, साथ ही देश पर्यन्त फैली हमारी सैंकड़ों शाखाओं के साथ जुड़े लाखों व्यवसायी, उद्यमकर्ता, बचतकर्ता भी अपनी आजीविका चलाते हुए देश की उन्नति में अपना विशेष योगदान कर रहे हैं। आज उस विशालकाय वृक्ष के फलों के अलावा इसकी ठण्डी छांव में लाखों परिवारों को आश्रय मिल रहा है।

भूतकाल में झांकते हुए, वर्तमान में जीते हुए, आने वाले भविष्य की ओर देखते हुए इस विशाल फल वृक्ष (बैंक) के प्रति हमारा भी कुछ नैतिक कर्तव्य है कि पूर्वजों ने हमें जो दिया है, हम उसे इतना बढ़ाएं, इतना उन्नत करें कि आने वाली पीढ़ी इसके संस्थापकों को नमन करते हुए आदर प्रदान करे और वर्तमान पीढ़ी को इस देन के लिए धन्यवाद दे। अतः भूतकाल से सीखते हुए वर्तमान को इतना संवारें कि आने वाला कल स्वर्णिम हो और आपको भी उसी आदर से याद किया जाए, जिस आदर से हम अपने संस्थापकों को याद करते हैं।

बकौल स्वामी विवेकानन्द जी के - उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक मंज़िल प्राप्त न हो जाए। पुनः बैंक के स्थापना-दिवस की शुभकामनाएं ज्ञापित करते हुए आप सभी का आहवान करता हूं कि आपके अथक प्रयासों से पंजाब एण्ड सिंध बैंक अन्य बैंकों के साथ विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

आपका अपना

डी पी सिंह

डी. पी. सिंह, *आई.ए.एस.*
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियो,

'राजभाषा अंकुर' का प्रत्येक अंक अपने आप में विशेष होता है। यह अंक बैंक के 'स्थापना दिवस' पर आधारित होने के साथ-साथ मेरे लिए भी ख़ास अहमियत रखता है, क्योंकि पंजाब एण्ड सिंध बैंक में साढ़े तीन वर्ष के कार्य-काल के बाद मैं सेवानिवृत्त हो रहा हूँ तथा इस पत्रिका के माध्यम से आप लोगों के समक्ष अपनी बात रखने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विभिन्न बैंकों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह-पत्रिकाओं में 'राजभाषा अंकुर' का अपना विशिष्ट स्थान है। राजभाषा विभाग काफी समय से 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' का सफ़लतापूर्वक प्रकाशन करते हुए कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता को सकारात्मक दिशा प्रदान कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी राजभाषा विभाग इसी प्रकार कार्मिकों को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उम्मीद से बढ़कर प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित करता रहेगा एवं नई-नई उपलब्धियां अर्जित करेगा।

इस विशेषांक में बैंक की स्थापना से लेकर आज तक की विकास यात्रा का संकलन किया गया है जिससे युवा कर्मियों के साथ आने वाली पीढ़ी भी बैंक के इतिहास से परिचित होगी। निश्चित रूप से राजभाषा विभाग इस अति महत्वपूर्ण संग्रहणीय अंक के प्रकाशन हेतु बधाई का पात्र है।

अपने कार्य-काल पर नज़र डालते हुए मुझे संतुष्टि है कि इस दौरान 'अंकुर' पत्रिका को छःमाही के स्थान पर तिमाही किया गया। इसके अतिरिक्त 'अंकुर' पत्रिका बैंक की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास भी है कि आने वाले दिनों में 'पंजाब एण्ड सिंध बैंक' बैंकिंग जगत में नए आयाम स्थापित करेगा, जिसका एक आधार स्तम्भ 'राजभाषा अंकुर' भी होगा।

शुभकामनाओं के साथ!

आपका,

(पी. के. आनन्द)
कार्यकारी निदेशक

संदेश

किसी भी संस्था के लिए उसका इतिहास एवं संस्कृति उसके स्वयं के लिए एक अनमोल एवं अक्षुण्ण संपत्ति होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारे बैंक के 'राजभाषा विभाग' ने बैंक की 105 वर्षों की विकास यात्रा के ऐतिहासिक पलों को इस पत्रिका में संजोने का एक अनुपम प्रयास किया है। बैंक के इतिहास से संबंधित इस विशेषांक से, एक तरफ जहाँ आप सभी को बैंक के गौरवमयी इतिहास को जानने का सुअवसर मिलेगा वहीं सामाजिक विकास में बैंक के अमूल्य योगदान की भी जानकारी प्राप्त होगी। इस अंक से बैंक के इतिहास के बारे में मिली जानकारी को आप सभी एक अमूल्य निधि के रूप में सहेज कर रखेंगे,

इसी विश्वास के साथ......

जी. एस. बिन्द्रा
मुख्य महाप्रबंधक

'राजभाषा अंकुर' का यह अंक एक विशेषांक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस अंक में राजभाषा विभाग ने बैंक के गौरवमयी इतिहास से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी को समाहित किया है, जिससे आप सभी पाठकों के साथ-साथ हमारे बैंक की नई युवा पीढ़ी भी परिचित एवं लाभान्वित होगी। मैं इस विशिष्ट कार्य के लिए राजभाषा विभाग को शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ, साथ ही यह भी आशा करता हूँ कि आप भविष्य में भी बैंक से जुड़ी इस तरह की ख़ास जानकारियों से हमारे सभी पाठकों एवं बैंक कर्मियों को पत्रिका के माध्यम से परिचित कराते रहेंगे। पुनः शुभकामनाओं सहित,

एम. जी. श्रीवास्तव
महाप्रबंधक एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी

हमारे बैंक का राजभाषा विभाग हमेशा ही नूतन गतिविधियों में सक्रिय रहता है। जिसे आप सभी हर तिमाही में पत्रिका में संकलित नई एवं रोचक जानकारियों के द्वारा साक्षात्कार भी करते हैं। इस तिमाही में राजभाषा विभाग हमारे बैंक के इतिहास से जुड़ी ख़ास जानकारियों से आपको रू-ब-रू करा रहा है। मैं इस कार्य को राजभाषा विभाग का एक अनोखा प्रयास कहूंगा क्योंकि इससे एक तो आप सभी बैंक के इतिहास से परिचित होंगे, दूसरा यह हमारे पूर्वजों के लिए भी एक श्रद्धांजलि स्वरूप होगा। राजभाषा विभाग को शुभकामनाएं देते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे बैंक की संस्कृति से जुड़े इस तरह के सार्थक प्रयासों को भविष्य में भी जारी रखेंगे।

जी. एस. सचदेवा
महाप्रबंधक (मानव संसाधन, विकास विभाग)

बैंक के 105वें स्थापना दिवस पर आप सभी को हार्दिक बधाईयाँ एवं शुभकामनाएं। यह जानकर बहुत सुखद लगा कि बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित राजभाषा अंकुर के इस अंक में बैंक के 105 वर्षों के गौरवमयी इतिहास को एक विशेषांक के रूप में सहेजा जा रहा है। यह प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसनीय है, जो आने वाले समय में मील का पत्थर साबित होगा।

इस प्रकार के प्रयास न केवल दूरदर्शिता के द्योतक हैं बल्कि वर्तमान पीढ़ी को भविष्यकाल के बारे में अवगत कराने एवं अपने-आप को जानने का सुअवसर प्रदान करते हैं। अंकुर के संपादक मंडल को इस संग्रहणीय अंक हेतु बधाईयाँ।

जी. एस. सेठी
फील्ड महाप्रबंधक

किसी भी संगठन या संस्था द्वारा अपने वजूद से जुड़ी जानकारियों को संजोए रखना एक बड़े ही गौरव की बात है। हमारे बैंक के राजभाषा विभाग ने भी इसी दिशा में एक छोटा सा लेकिन बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है। राजभाषा विभाग इस तिमाही का यह अंक एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है, जो कि बैंक के गौरवमयी इतिहास से जुड़ा है। बैंक के इतिहास से जुड़े हमारे महान पूर्वजों को श्रद्धांजलि देता यह विशेषांक हम सभी स्टाफ़-सदस्यों को भी अपनी बैंकिंग सभ्यता को अद्वितीय बनाने हेतु अनूठा संदेश देकर जाएगा। मैं इसके लिए राजभाषा विभाग को शुभकामनाएं देता हूँ।

इकबाल सिंह भाटिया
महाप्रबंधक, स्थानीय प्रधान कार्यालय,चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हमारे बैंक की पत्रिका 'पी.एन.बी. राजभाषा अंकुर' का अप्रैल-जून अंक 'स्थापना-दिवस' विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। निःसंदेह गृह-पत्रिका का उद्देश्य अपने स्टाफ़ - सदस्यों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाना व उनके भीतर की रचनात्मकता को आधार प्रदान करना है, किंतु 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक अपने उद्देश्य को एक नया आयाम प्रदान करेगा।

राजभाषा विभाग ने इस विशेषांक के माध्यम से हमारे बैंक के एक शताब्दी पुराने इतिहास को सबके समक्ष प्रस्तुत कर एक नया इतिहास रचने का प्रयास किया है, जो निःसंदेह एक महत्वपूर्ण कार्य है। 'राजभाषा अंकुर' के सम्पादक मंडल का साधुवाद।

दीपक मैनी
महाप्रबंधक (आई.टी.)

बैंक के 105 वर्षों की यात्रा पूर्ण करने पर 'राजभाषा अंकुर' का 'स्थापना दिवस' विशेषांक निश्चित रूप से संग्रहणीय अंक सिद्ध होगा। साथ ही यह भी प्रशंसनीय है कि जुलाई- सितम्बर अंक 'राजभाषा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मैं आशा करता हूँ कि राजभाषा विभाग के इन प्रयासों के फलस्वरूप बैंक में राजभाषा के प्रति और भी सकारात्मक वातावरण तैयार होगा। मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि बैंक पत्रिका में अपना अधिक से अधिक योगदान देते हुए अपनी रचनात्मकता को नई दिशा प्रदान करें।

हर्षबीर सिंह
महाप्रबंधक (प्राथमिकता क्षेत्र)

सर्वप्रथम मैं राजभाषा विभाग को बैंकिंग इतिहास से जुड़े इस विशेषांक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूं। आज की इस भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में जहाँ हम अपने संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं, वहीं अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भी भूलते जा रहे हैं। परंतु हमारे बैंक का राजभाषा विभाग बैंक से जुड़ी अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने के उद्देश्य से बैंक के अनोखे इतिहास को इस विशेषांक में आपके समक्ष उजागर करने जा रहा है। इस अंक के माध्यम से बैंक से जुड़ी हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का यह मधुर संदेश हमारे सभी स्टाफ़ सदस्यों के मन को भी इसके लिए प्रेरित करेगा। शुभकामनाओं सहित...,

एस. पी. एस. कोहली
महाप्रबंधक (लेखा एवं लेखा परीक्षा)

बैंक की स्थापना के 105 वर्षों की विकास यात्रा समेटे यह अंक राजभाषा विभाग का प्रशंसनीय प्रयास है, दूरदर्शिता का परिचायक होने के साथ-साथ सृजनता का द्योतक भी है। आज हमारा बैंक बैंकिंग उद्योग में सर्वाधिक युवाशक्ति वाला पहला बैंक है, जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक कार्मिक 30 वर्ष से कम उम्र के हैं। जहाँ यह अंक उनके लिए एक प्रेरणास्रोत बनेगा, वहीं दूसरी ओर बैंक के पुराने एवं अनुभवी कार्मिक, जो विगत वर्षों में सेवानिवृत्त हुए हैं या आने वाले 2-4 वर्षों में सेवानिवृत्त होने वाले हैं, उनकी पुरानी यादों को तरोताज़ा करेगा।

यह अंक हमें अपने अंर्तमन में झांकने को भी मजबूर करेगा और कल, आज और कल के बारे में कुछ विशेष निर्णय लेने हैं कि हम कहाँ थे, आज क्या हैं और कल क्या बनना है। इस कम्प्यूटराइज़्ड युग में विचरण करते हुए अपनी पहचान को कायम रखना है, अपनी संस्कृति एवं विरासत को विविध आयाम देते हुए लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में हमेशा एवं अनवरत कार्य करते रहना है, क्योंकि जीवन गतिशीलता का दूसरा नाम है।

इस अतुलनीय एवं संग्रहणीय अंक के लिए राजभाषा विभाग एवं 'अंकुर' पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

जी. एस. ढल्ल
महाप्रबंधक (योजना एवं विकास)

संपादकीय

प्रिय साथियो,

'राजभाषा अंकुर' के इस विशेष अंक का संपादकीय लिखना एक अनोखा अनुभव है। प्रयत्न है कि बैंक की नयी पीढ़ी अपने गौरवमयी इतिहास को जाने, जो उन्हें वर्तमान में सक्रिय बनाने तथा बैंक के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा। अतीत की थाती, वर्तमान के हाथों में है। भविष्य फिर वर्तमान बनेगा और वर्तमान भविष्य को अपनी ज़िम्मेदारी सौंपेगा। यह प्रगति की एक प्रक्रिया है। सुकरात ने कहा था, ''अपने को जानो''। यह अंक आपको अपने बैंक की विकास यात्रा से परिचित कराने में सफ़ल होगा।

इस बैंक की स्थापना का उद्देश्य अन्य बैंकों से अलग था। जहाँ अन्य बैंक किसी न किसी औद्योगिक घराने से जुड़े थे, जिनका ध्येय लाभ कमाना था। वहीं इस बैंक की स्थापना 24 जून 1908 को अमृतसर की पावन भूमि पर अवसर विहीन लोगों के उत्थान के लिए की गई थी। तब से लेकर आज तक दशकों से बैंक ने अनेक झंझावतों का सामना किया है तथा हर बार पहले से भी अधिक सुदृढ़ होकर सामने आया।

इक़बाल की पंक्तियाँ बरबस याद आ रही हैं :

''बाकी मगर है अब तक नामो-निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।''

इस अंक में कई दुर्लभ चित्र समाविष्ट हैं, जो राष्ट्र को समर्पित 105 वर्षों की एकनिष्ठ सेवा की लम्बी यात्रा के साक्षी हैं।

सरदार तरलोचन सिंह जी, सर सुंदर सिंह जी मजीठिया और भाई वीर सिंह जी ने जिस सेवा भाव से इस बैंक की स्थापना की, वह बैंक कार्मिकों को ऊँचे मानवीय फ़लक पर ले जाने के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

विभाजन अपने साथ जो चुनौतियाँ लेकर आया, बैंक ने उनका दृढ़ता पूर्वक सामना किया। पाकिस्तान में अपना सब कुछ पीछे छोड़ आए खाताधारियों को ब्याज सहित पूरी जमा-राशि का भुगतान बैंक ने अपनी पुंजी तथा आरक्षित निधियों से किया। इससे बैंक के प्रति लोगों का विश्वास दृढ़ हुआ, हालांकि इससे बैंक की लाभप्रदता प्रभावित हुई।

''डॉक्टर इन्द्रजीत सिंह जी का अनूठा योगदान'' बैंक के स्वर्णिम युग की शुरुआत की कहानी है। उनके नेतृत्व में बैंक ने अभूतपूर्व प्रगति की। वर्ष 1969 से 1975 तक के बीच शाखा विस्तार के कारण बैंक ने पूरे बैंकिंग उद्योग में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की। बैंक के कार्मिकों ने घर-घर जा कर लोगों को बैंकिंग सेवा प्रदान की जिसे आज ''डोर-टू-डोर बैंकिंग'' के नाम से जानते हैं। अन्य बैंकों ने प्रतिस्पर्धा के युग में इस तरह की ग्राहक-सेवा के महत्व को समझा है। राष्ट्रीयकरण से एक नए अध्याय का आरंभ हुआ है। उस समय बैंक में काम करने वाले कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को भारत सरकार ने परवर्ती काल में अन्य बैंकों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के पद पर नियुक्त किया। जिनकी कार्य-शैली व कर्त्तव्यनिष्ठा से हमारे पाठक अवश्य प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

आज बैंक को उच्च स्तर की ग्राहक-सेवा की आवश्यकता है ताकि हम प्रतिस्पर्धा में आगे रहें तथा बैंक का दिन-प्रतिदिन विकास हो। निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। एक कवि के अनुसार **''तुम शिखरों पर बढ़ते जाना जहाँ क्षितिज का अंत नहीं, तुम्हें वहीं पर तो है जाना''**। यह मानव की अनंत संभावनाओं का संदेश है। रामायण में हनुमान जी का कथन, **''रामकाज कीन्हें बिना मोहि कहाँ विश्राम''** भी हमें अबाध रूप में आगे बढ़ने का संकेत देता है।

यह अंक युगानुकूल बदलती हुई परिस्थितियों में हम सबको कार्य करने की असाधारण प्रेरणा देता रहेगा। इस प्रयास के प्रेरणा स्रोत हैं - श्री डी. पी. सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा श्री पी. के. आनन्द, कार्यकारी निदेशक। इस अंक के प्रकाशन व सामग्री के संग्रहण हेतु सरदार मक्खन सिंह, भूतपूर्व उप महाप्रबंधक सहित अन्य सभी सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारियों व समस्त सहयोगियों का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि इस अंक के माध्यम से आप सभी में नवस्फूर्ति का संचार होगा।

आपकी प्रतिक्रिया की आशा में,

(आर. सी. नारायण)
महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

अर्थ-जगत में एक नया इतिहास

ਅਜ ਬੁਧਵਾਰ 24 ਜੁਨ 1908 ਦਾ ਦਿਨ ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ ਹੈ ਜਦਕਿ .ਗਰੀਬ ਸਿੱਖ ਕੌਮ ਨੇ ਤਜਾਰਤ ਦੇ .ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਇਕ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਕਦਮ ਰਖਿਆ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਪੁਛੋਗੇ ਕਿ ਇਹ ਕੀ ਹੈ ? ਇਸਦਾ ਸਿੱਧਾ ਜਿਹਾ ਜਵਾਬ ਹੈ- ਕਿ ਅਜ ਇਕ ਖਜਾਨਾ ਖੋਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਰੁਪਏ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਘਰਾਂ ਤੋਂ ਚਾਂਦੀ ਦੀਆਂ ਨੈਆਂ ਜਾਰੀ ਹੋ ਕੇ ਇਸ ਖਜਾਨੇ ਵਿੱਚ ਪੈਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿੱਚੋਂ ਲੋੜਵੰਦਾਂ ਦੇ ਕੰਮ ਸਾਰਨ ਲਈ ਨਹਿਰਾਂ, ਰਾਜਬਾਹੇ, ਕੱਸੀਆਂ ਤੇ ਮੋਘੇ ਜਾਰੀ ਹੋਣਗੇ ਅਤੇ ਜੇਕਰ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਤਕੜੇ ਹੋ ਕੇ ਇਸ ਵੇਲੇ ਤੋਂ ਲਾਭ ਉਠਾਇਆ ਤਦ ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਗਿਰੀ ਹੋਈ ਮਾਲੀ ਹਾਲਤ ਛੇਤੀ ਉਨੱਤੀ ਕਰ ਜਾਏਗੀ ਅਤੇ .ਗਰੀਬ ਕੌਮ ਕੁੱਝ ਅੰਨ ਪਾਣੀ ਜੋਗੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ। ਆਪ ਪੁਛੋਗੇ ਕੀ ? ਤਦ ਅਸੀਂ ਦਸਾਂਗੇ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ ਲਿ: ਅਜ ਖੁਲ ਗਿਆ ਹੈ। 8 ਵਜੇ ਸਿਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਭੋਗ ਪਿਆ। ਭਾਈ ਸੋਹਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਅਰਦਾਸਾ ਸੋਧਿਆ ਅਤੇ ਬੈਂਕ ਦੇ ਲਾਭ ਸਮਝਾਏ । ਫਿਰ ਕੰਮ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।ਭਾਈ ਸੋਹਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਬੈਂਕ ਦੇ ਲਾਭ ਦਰਸਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ "ਬੈਂਕ ਦਾ ਮੰਤਵ ਛੋਟੇ ਕਿਸਾਨ, ਛੋਟੇ ਵਪਾਰੀ ਅਤੇ ਛੋਟੀ ਤਜਾਰਤ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕਰਜ਼ੇ ਦੇ ਕੇ ਉੱਚਾ ਚੁਕਣਾ ਹੈ, ਜਿਸਦੇ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਘੱਟ ਵਿਆਜ ਤੇ ਕਰਜ਼ੇ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣਗੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਰਕਾਰੀ ਤੌਰ ਤੇ 24 ਜੁਨ 1908 ਨੂੰ ਬੈਂਕ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਹੋਇਆ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਦੇ ਲਈ ਸਮਰਪਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

ਸੰਪਾਦਕੀ -ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ , ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ਜੁਨ 1908

हिंदी अनुवाद

आज दिनांक 24 जून, 1908, बुधवार को सिख समुदाय ने व्यापार तथा उद्योग के क्षेत्र में ऐतिहासिक कदम उठाया है। आप पूछेंगे कि यह क्या है? इसका सीधा सा जवाब है कि व्यापरियों, कारीगरों और किसानों की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु एक खज़ाना घर खोला गया है। एक बैंक खोला गया है जिसमें अमीरों के घरों से धन पानी की तरह बहेगा और फिर यह राशि नहरों, सहायक नदियों, धाराओं तथा नालों की तरह ज़रूरतमंद व्यापरियों, कारीगरों तथा किसानों के घरों तक पहुँचेगी। यदि सिखों ने अपने आर्थिक कल्याण के लिए इस अवसर का ईमानदारी पूर्वक उपयोग किया तो यह उनके आर्थिक पिछड़ेपन को अवश्य ही दूर करेगा और इससे ग़रीब तबके के लोग आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो जाएंगे। आप पूछेंगे कैसे? तो हम आपको बताएंगे कि आज प्रातः 8.00 बजे पंजाब एण्ड सिंध बैंक लिमिटेड का उद्घाटन हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अखण्ड पाठ सम्पूर्ण हुआ, भाई सोहन सिंह जी ने अरदास की और फिर उन्होंने वहाँ एकत्रित लोगों को विस्तारपूर्वक बैंक के लाभ बताए। इसके बाद बैंक का कार्य शुरू हुआ। भाई सोहन सिंह जी ने कहा कि बैंक की स्थापना का मूल उद्देश्य उन लोगों, ख़ासकर कारीगरों, व्यापारियों तथा किसानों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना है, जिसके लिए उन्हें कम ब्याज पर धन उपलब्ध कराया जाएगा। इस प्रकार सरकारी तौर पर 24 जून, 1908 को बैंक का उद्घाटन हुआ और इसे जनता के लिए समर्पित किया।

सम्पादकीय - खालसा समाचार, अमृतसर, जून 1908

Translation of the above news item

Today (June 24, 1908, Wednesday) the Sikh Community has taken a historic and first step in the field of business and trade. you will ask what is it? Plain answer is that to meet the business requriements of traders, artisans and farmers a treasure house has been opened. One bank has been opened in which streams of money will flow from houses of rich and these funds will flow in the shape of canals, tributaries, their streams and drains in the houses of needy traders, artisans and farmers and if the Sikhs will take this opportunity in right earnest and with fairness for their economic welfare, it will certainly ameliorate their economic backwardness quickly and this poor community will become self dependent. You will ask how? Then we will tell you that today Punjab And Sind Bank Ltd. has been opened at 8 A.M. The continuous recitation of the logos of divine manifestation from the holy Adi Guru Granth (Akhand Path) has been concluded. Bhai Sohan SIngh performed the Congregationial Prayer (Ardas) and then informed the congregation about the benefits of Banking and the Bank. Thereafter the business of the Bank was started. Bhai Sohan Singh said that the main objective of the setting up of Bank was to raise the standard of living of people particularly the artisans, traders and farmers by lending money to them at the low rate of interest. The Bank was thus officially inaugurated the following day on June 24, 1908 and was opened to the public.

Editorial - KHALSA SAMACHAR, Amritsar, June 1908

बैंक का गौरवमयी इतिहास

किसी भी महान संस्था की कामयाबी व महत्व जानने के लिए ज़रूरी है कि उसकी पृष्ठभूमि पर नज़र डाली जाए ताकि पता लग सके कि इतनी महान संस्था को वजूद में लाने के लिए किन विशिष्ट व्यक्तियों की सोच व दूरदर्शिता ने काम किया।

आज से 80-85 साल पहले के इतिहास पर नज़र डालें तो पता लगता है कि पंजाब में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आ चुकी थी, जगह - जगह पर स्कूल खोले जा रहे थे। ख़ालसा कॉलेज की स्थापना तो पहले ही की जा चुकी थी पर उसकी जड़ें-जमाने व उसकी आर्थिक हालत सुधारने के लिए सर सुंदर सिंह जी मजीठिया (बैंक निदेशक) की अगुवाई में पूरा ज़ोर लगाया जा रहा था। उनकी कोशिशों व अथक प्रयासों को देखते हुए सारी मैनेजिंग कमेटी कंधे से कंधा मिलाकर सेवा में जुट गई। धार्मिक प्रवृत्ति वाले विद्वान चिंतक व लेखक यथा भाई जोध सिंह, प्रोफ़ेसर तेजा सिंह, प्रोफ़ेसर हरकिशन सिंह ने अध्यापन कार्य आरम्भ कर दिया।

बैसाखी वाले दिन सन् 1904 में कॉलेज की नई इमारत के नींव का पत्थर पंजाब के लेफ्टीनेंट गवर्नर सर चार्ल्स ने मिंटगुमरी में रखा। जिसमें राजे-महाराजे, अहलकार, किरती, किसान व सिख फ़ौजियों ने अपना सहयोग व योगदान दिया।

कॉलेज की सफलता व विस्तार से पंजाबियों विशेषकर सिखों में नया उत्साह जागृत हुआ। इस जागृति का उल्लेख मिस्टर टी. पैटरी ने अपनी ख़ुफ़िया रिपोर्ट में भी किया। धर्म के प्रचार के लिए उठी लहरों ने न सिर्फ़ पंजाब बल्कि पंजाब की हदों के पार तक अपना असर दिखाना शुरु कर दिया। सिंध में बसे हुए भाईयों को साथ जोड़ने के लिए चीफ़ ख़ालसा दीवान ने 1906 में इस काम में तेज़ी लाने के लिए सिंध बलूचिस्तान प्रचार सब-कमेटी बनाई। जिसमें 11 सदस्य थे। इनमें प्रमुखतः साधु सिंह धूपिया, सरदार काबल सिंह, सरदार हरबंस सिंह अटारी, भाई गोकल सिंह गड़ी सदस्य थे। उस साल दिसम्बर में पहला प्रचारक जत्था भेजा गया। जिसमें भाई अरजन सिंह बागड़िया, (प्रधान), सर सुंदर सिंह मजीठिया (सैक्रेटरी), सरदार हरबंस सिंह अटारी (ज्वाइंट सैक्रेटरी), भाई जोध सिंह, (असिस्टेंट सैक्रेटरी) प्रमुख थे। इस जत्थे में सरदार उत्तर सिंह, जो पहले सिंध के दौरे पर गए हुए थे, ने जत्थे के साथ सम्पर्क करके अलग-अलग स्थानों पर दीवान सजाकर लोगों को जागृत किया। इसका बहुत ज़्यादा असर हुआ। इस प्रभाव का वर्णन सरदार मेहर सिंह ने इस तरह किया, *"जब पंजाब के सिख सरदारों को संगत के जोड़े झाड़ते, लंगर के जूठे बर्तन मांजते, पंगतों की जूठी पत्तलें उठाते हुए देखा तो वह सिखी की तरफ़ प्रेरित हो गए।"* गुरबाणी में दी गई शिक्षा ने उन पर गहरा प्रभाव डाला। तम्बाकू व शराब से उनको नफ़रत हो गई। इस जत्थे की कार्रवाईयों से लोगों में आए उत्साह को देखते हुए वर्ष 1907 में कराची में हो रही "मुस्लिम एजुकेशन कांफ्रेंस" में जत्था भेजा गया। इस कांफ्रेंस की सफलता को देखते हुए प्रमुख प्रचारकों ने फ़ैसला लिया कि वे वापिस पहुँच कर अगले साल "सिख एजुकेशन कांफ्रेंस" करेंगे।

अमृतसर पहुँचते ही सर सुंदर सिंह मजीठिया ने अपने घर पर जनवरी, 1908 में जाने-माने नेताओं की मीटिंग बुलाई। जिसकी अध्यक्षता सरदार तरलोचन सिंह जी (बैंक के पहले मैनेजिंग डायरेक्टर) ने की। सर्व सम्मति के साथ "सिख एजुकेशन कांफ्रेंस" स्थापित करने का ऐतिहासिक फ़ैसला लिया गया। इस तरह एक ऐसी संस्था की स्थापना हो गयी, जिसने कालान्तर शक्तिशाली लहर का रूप धारण कर लिया। शिक्षा व धर्म के क्षेत्र में पिछड़ चुकी सिख कौम एक बार पुनः जागृत हो गई व उन्नति की तरफ़ कदम बढ़ाने लगी। इस संस्था की स्थापना से इतना उत्साह पैदा हुआ कि तीन महीनों के अंदर पहली "सिख एजुकेशन कांफ्रेंस" पुराने पंजाब के प्रसिद्ध शहर गुजरांवाला में की गई। जिसकी अध्यक्षता सरदार बघेल सिंह जी ने की।

इस कांफ्रेंस की सफलता का नतीजा यह निकला कि किए गए फ़ैसलों पर अमल करने के लिए व इस लहर को निरंतर जारी रखने के लिए "सिख एजुकेशनल कमेटी" स्थापित की गई। इस सफलता से उत्साह प्राप्त करके इस लहर के नेताओं ने सोचा कि अब समय आ गया है कि आर्थिक क्षेत्र में प्रगति लाने के लिए जिस संस्था के बारे में सोचा जा रहा था, उसे वजूद में लाया जाए। इस वातावरण में 'पंजाब एण्ड सिंध बैंक' की स्थापना की गयी।

24 जून 1908 को अमृतसर में गुरु महाराज का ओट-आसरा लेकर इस बैंक का शुभारम्भ किया गया। बैंक को चलाने के लिए सरदार तरलोचन सिंह जी को पहला मैनेजिंग डायरेक्टर चुना गया। सभी को उत्साह व अगुवाई देने वाले आधुनिक पंजाबी साहित्य के

पितामह भाई साहिब भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह जी मजीठिया व सरदार तरलोचन सिंह जी ने बैंक को चलाने की सारी ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। अपनी असाधारण योग्यता से तीनों ने संस्था की नींव पक्की करने के लिए नई-नई योजनाएं तैयार कीं व उन्हें क्रियान्वित किया। तीनों मित्रों (त्रि-संगम) ने बैंक को अपनी मेहनत, लगन व कर्मठता से, मन, वचन व कर्म से दिन दोगुनी व रात चौगुनी प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। तीनों मित्रों ने जो भी कार्य किया, उसमें उन्हें चमत्कारिक रूप से सफलता मिलती गई।

बीसवीं सदी के आरम्भ से सिखों में एक नई जागृति आई और यह भी ख़्याल आया कि कौमी उन्नति के लिए ज़रूरी है कि हर वर्ग की तरक्की की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया जाए। इस विचार को साकार रूप देने के लिए और ग़रीबों, अनाथों की सेवा-संभाल के लिए "चीफ़ ख़ालसा दीवान" के नेतृत्व में वर्ष 1904 में अमृतसर में 'सैंट्रल ख़ालसा यतीमख़ाना' खोला गया। इस आश्रम में अनाथ बच्चों के पालन-पोषण, पढ़ाई-लिखाई व कीर्तन सिखाए जाने के विशेष प्रबंध किए गए। होनहार बच्चों के लिए उच्च-शिक्षा का पुख़्ता इंतज़ाम किया गया। इस आश्रम से शिक्षा प्राप्त करके एवं कीर्तन का प्रशिक्षण लेकर निकले कई व्यक्ति प्रसिद्ध कीर्तनिए बने। इसके अतिरिक्त कई अन्य विद्वान भी आश्रम की देन हैं, जिन्होंने देश, समाज व कौम की बेमिसाल सेवा की है। भाई संता सिंह रागी, भाई सुरजन सिंह रागी, भाई गोपाल सिंह रागी व शहीद उधम सिंह जैसी अनेक हस्तियाँ इसी आश्रम की देन हैं।

"चीफ़ ख़ालसा दीवान" के सेवकों ने प्रचार हेतु 1906 से हर साल सिंध में जत्था भेजने का कार्य आरम्भ किया। 1907 में उस प्रांत में शिकारपुर के पास 'ख़ालसा यतीमख़ाना' खोल दिया। इस तरह पंजाब व सिंध का मिलाप और भी प्रगाढ़ हो गया। पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्थापना ने दोनों प्रांतों को और भी नज़दीक कर दिया, क्योंकि इन दोनों प्रांतों के नाम पर ही बैंक का नाम रखा गया।

चीफ़ खालसा दीवान की स्थापना

बीसवीं सदी के आरम्भ में एक और विचार सिख नेताओं के सामने आया। केंद्रीय जत्थेबंदी की एकत्रता की ज़रूरत को देखते हुए 'सिंह सभाओं' को एक केन्द्र के साथ जोड़ने की आवश्यकता को देखते हुए वर्ष 1901 की बैसाखी के दिन अमृतसर के प्रतिनिधियों को एकत्रित करके इस स्वप्न को साकार रूप देने हेतु 22 सदस्यों की एक सब-कमेटी बनाई गई। जिसकी रिपोर्ट पर एक और बड़ी मीटिंग नियम व उपनियम बनाने के लिए हुई। इस मीटिंग में नियम व उपनियमों को बनाए जाते समय सभी के साथ परामर्श किया गया व 33 सिंहों की एक 'सब कमेटी' का गठन किया जाए। इस कमेटी का काम जत्थेबंदी की रूप-रेखा तैयार करना था।

'चीफ़ खालसा दीवान' की रिपोर्ट में लिखा है कि 19 अगस्त, 1902 को हुई पंथक एकत्रता में फैसला किया गया कि केंद्रीय जत्थेबंदी के गठन का कार्य एक 'सब-कमेटी' को सौंप दिया जाए। जिसका नाम 'चीफ़ खालसा दीवान प्रबंधक कमेटी' रखा जाए। इस जत्थेबंदी के गठन का मसौदा 21 सितम्बर, 1902 की एकत्रता में पास हुआ व 'चीफ़ खालसा दीवान' की स्थापना की गई। इसका पहला समागम 30 अक्टूबर, 1902 को दीवाली वाले दिन 'मलवयी बुंगे' अमृतसर में हुआ। भाई तेजा सिंह भसौड़ वालों ने चीफ़ ख़ालसा दीवान की स्थापना की अरदास की।

इस संस्था के आरंभ में 16 सदस्य थे। 21 सदस्यों की कार्यकारी कमेटी बनाई गई। भाई अरजन सिंह बागड़िया पहले प्रधान व सर सुंदर सिंह मजीठिया (संस्थापक व निदेशक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक) पहले सचिव एवं सोढी सुजान सिंह, पटियाला वाले पहले सहायक सचिव चुने गए। यह संस्था "चीफ़ ख़ालसा दीवान" एक्ट 21 ऑफ 1860 के तहत जुलाई, 1904 को पंजीकृत हुई। इस केंद्रीय जत्थेबंदी की स्थापना के साथ चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गयी। हर क्षेत्र में आई आर्थिक व समाजिक कमज़ोरियों को दूर करने के प्रयास आरम्भ हो गए। देश, कौम व समाज के लिए कुछ कर सकने का उत्साह व जज़्बा जागा। आर्थिक पिछड़ेपन को ख़त्म करने के लिए व्यापार, खेती-बाड़ी की तरक्की ज़रूरी थी, इसलिए कुछ नवीन व अच्छी योजनाओं को क्रियान्वित करने की आवश्यकता महसूस होने लगी। ऐसे हालत में अपना कोई बैंक स्थापित किया जाना, समय की मांग, ज़रूरत व चुनौती थी। 'पंजाब एण्ड सिंध बैंक' इसी स्वपन को साकार रूप देने का उपक्रम था।

इसी लेख में हमने सरदार तरलोचन सिंह के महत्वपूर्ण योगदान का वर्णन किया है, जो कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक के प्रथम मैनेजिंग डायरेक्टर थे। जिन्होंने 1908 से आरम्भ करके 1947 तक तन-मन-धन से सेवा निभाई। यहाँ पंजाब एण्ड सिंध बैंक के पहले चेयरमैन सर सुंदर सिंह मजीठिया के योगदान का वर्णन किया जा रहा है।

सर सुंदर सिंह मजीठिया का संबंध पंजाब के ऊँचे व ऐतिहासिक घराने से है। इस घराने ने पंजाब व सिखों की ऐतिहासिक सेवा करके महाराजा रणजीत सिंह के समय में बहुत नाम कमाया है। इस घराने

का पंजाब एण्ड सिंध बैंक के साथ घनिष्ठ व विशेष संबंध रहा है। सर सुंदर सिंह मजीठिया ने एक ओर जहाँ शैक्षिक, धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में सेवाएं करके अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था, वहीं वे पंजाब के लोगों के सामने आ रही आर्थिक कठिनाईयों से भी भली प्रकार परिचित थे। यद्यपि उनका अपना पालन-पोषण अमीर घराने में हुआ था।

प्रयास तेज़ कर दिए गए। सिख रियासतों के साथ क़ौम के संबंध घनिष्ठ किए। सरकारी व मिल्ट्री की उच्च पदवियाँ प्राप्त करने के लिए सफ़लता की राह तैयार की। जिस तरह सिख क़ौम में आपका मान व सम्मान था, उसी तरह सरकार भी आपके कार्यों व कार्य-शैली की कद्र करती थी। आपने पंथ के विद्वानों को ऊँचा स्थान दिलवाया।

वंशावली राजा सूरत सिंह मजीठिया

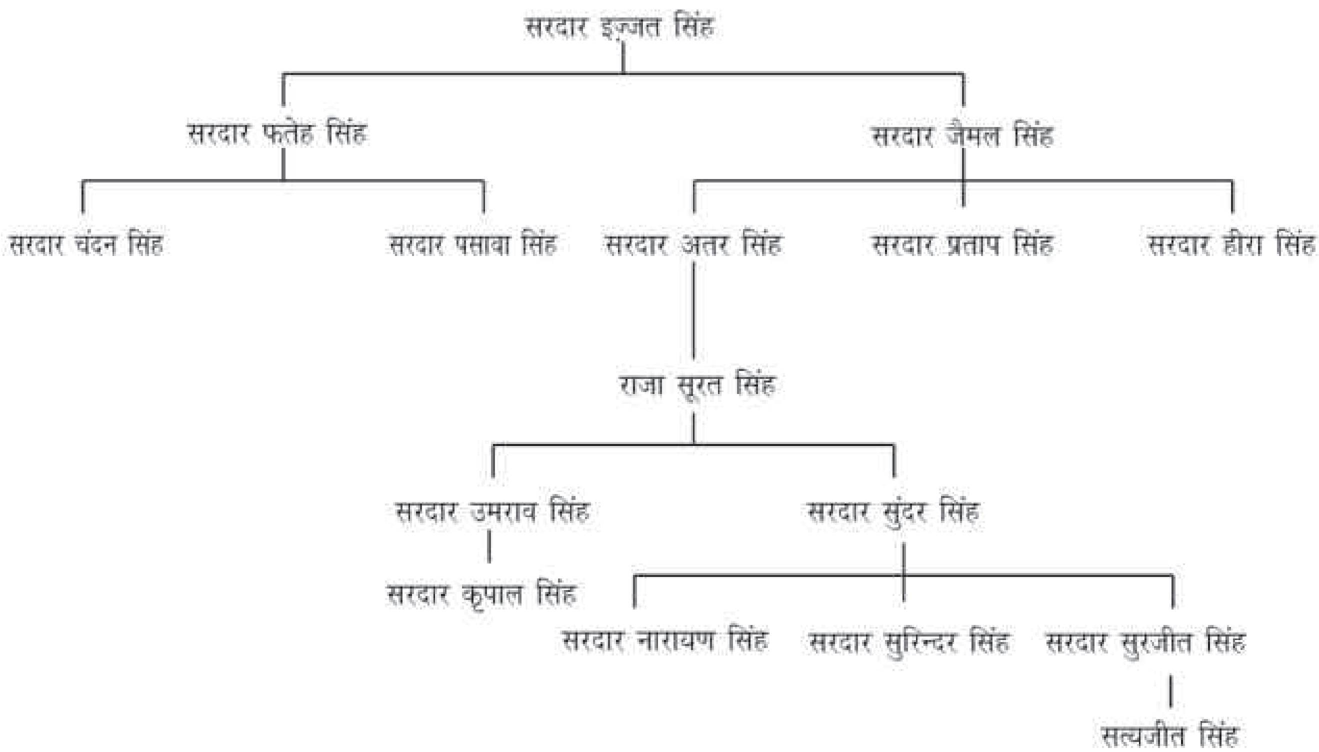

भाई साहिब भाई वीर सिंह, सरदार तरलोचन सिंह जी के साथ मिलकर इस त्रि-संगम ने उस समय कौम का पथ-प्रदर्शन किया, उसमें उनका उद्देश्य पंजाबियों की भलाई करना तो था ही, साथ ही वे अपने अपने कार्य-क्षेत्र की सरगर्मियों में भी भरपूर हिस्सा डालते रहे। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के रोज़ाना के कार्यों को चलाने की जिम्मेदारी सरदार तरलोचन सिंह जी की थी और आप इसके पहले चेयरमैन नियुक्त किए गए। आपकी निगरानी में बैंक के कार्य-क्षेत्र का घेरा बढ़ता गया व जल्द ही अमृतसर के अलावा इसकी शाखाएं गुजरांवाला, लाहौर, रावलपिण्डी व लायलपुर में खुल गई। इन शाखाओं को खोलने का उद्देश्य था - सिखों में जागृति की लहर लाना। सर सुंदर सिंह मजीठिया ने कमज़ोर होती जा रही क़ौम में एक नए उत्साह व जोश की भावना भरी। अमीरों व सरदारों को झिझोड़ा। लोगों को सेवा करने के लिए प्रेरित किया। गाँवों में प्रचार के लिए सेवा की लहर को तेज़ करने के लिए आप स्वयं मिसाल बने। लंगर में से जूठी पतलों को उठाना, जूठे बर्तनों को मांजना एवं दीवान हॉल की दरियों को झाड़ने में फ़ख्र महसूस करना, ऐसी मिसाले थीं, जिन्होंने सेवा की महानता को पुनः संचारित किया। ऐसी शख़्सियत का बैंक का पहला चेयरमैन होना, लोगों व बैंक के लिए उत्साह व प्रेरणा का स्रोत था।

उनके पथ-प्रदर्शन की वजह से बैंक ने पूँजी के लिए जो शेयर निकाले वे हाथों-हाथ बिक गए। लोगों ने बैंक में हिस्सेदारी सेवा-भावना के साथ खरीदी थी, न की लाभ कमाने के लिए। जगह-जगह पर प्रचार की लहर चल रही थी। शैक्षिक उपक्रम खुल रहे थे। शैक्षिक कांफ्रेस हो रही थीं। इन सबके लिए इकट्ठे हुए रुपयों को संभालने के लिए फिर योग्य स्थान पर खर्च करने के लिए पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने बड़ा योगदान डाला।

1913 में जब बहुत सारे बैंक आर्थिक मुश्किलों के कारण फेल हो गए, तब भी यह बैंक अपने बलबूते पर टिका रहा। इसके पीछे भी मजीठिया साहब की दूरदर्शिता, परिश्रम व लगन काम कर रही थी। इनकी इस योग्यता व कर्मठता का सदुपयोग करने के लिए उस समय की सरकार ने इन्हें नए बने 'इम्पीरियल बैंक' का गवर्नर बनाया, वर्तमान में जिसका नाम "रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया" है। इनके गुणों का अधिक लाभ उठाने के लिए पहले इन्हें रेवेन्यू मेम्बर (राजस्व सदस्य), फिर पंजाब का राजस्व-मंत्री नियुक्त किया गया। जैसे-जैसे आप उच्च पदों पर आसीन होते गए, वैसे-वैसे आपके असर रसूख़ का सुखद प्रभाव पंजाब एण्ड सिंध बैंक पर भी पड़ता गया।

जब भी किसी ने आपकी प्रशंसा करने का यत्न किया तो आपने कहा कि *'किसी सेवक को अधिकार नहीं कि वे अपनी प्रशंसा करे या कराए।'* आपने सदैव ज़रूरत मंदों की सहायता की, आप अपने कार्यों में भले ही कितने भी व्यस्त क्यों न हों, आपने दूसरों के हित के लिए समय निकालना सदैव अपना परम धर्म समझा। जहाँ वे पंजाब एण्ड सिंध बैंक की ज़िम्मेदारी पूरी तरह से निभा रहे थे, वहीं दूसरी संस्थाओं का कार्य भी पूरी निष्ठा, लगन व परिश्रम से पूरा कर रहे थे। आप हर मुलाकाती के लिए समय निकालते व उसकी हर संभव सहायता करते। उनका कहना था, *"मैं किसी को मना नहीं कर सकता, मुझे सबको मिलना भी पड़ता है और सुनना भी। मेरे से जो काम हो सकते हैं, वह करने भी पड़ते हैं। फाइलों का ढेर भी रोज़ पढ़ना पड़ता है।"* उन्होंने हर पिछड़े व ग़रीब वर्ग की सहायता करके अपने प्यार, विश्वास और सहानुभूति को प्रकट किया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तरक्की का राज़

पंजाब एण्ड सिंध बैंक को ऊँचाईयों व शिखर पर ले जाने के लिए जब भी किसी कार्य को करने में कठिनाई आती तो उसका हल ढूढ़ने के लिए त्रि-संगम शख़्सियतें - भाई वीर सिंह, सरदार तरलोचन सिंह, सर सुंदर सिंह मजीठिया इकट्ठे बैठकर उसका हल निकालते। इनको मिले उच्च पदों की वजह से तथा आपसी प्रेम, सौहार्द व विश्वास से यह बैंक उन्नति की तरफ अग्रसर होता गया। इन तीनों व्यक्तियों की समझदारी, नेक नियति व कार्य-शैली से बैंक सदैव लाभान्वित होता रहा। इन तीनों शख़्सियतों के साथ काम करने वाले व्यक्ति भी सदैव सहयोग करने हेतु तत्पर रहते व सहायता करना अपना फ़र्ज़ समझते। जिसके फलस्वरूप बैंक सभी क्षेत्रों में पूरी सफलता के साथ प्रगति के सोपान निरंतर चढ़ता चला गया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक के गौरवमयी इतिहास का एक और अध्याय

इसी लेख में सर सुंदर सिंह मजीठिया व सरदार तरलोचन सिंह की पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्थापना व उन्नति के लिए की गई सेवाओं का ज़िक्र विस्तार सहित किया गया है, पर इससे पहले इस बात का भी इशारा किया गया है कि उस त्रि-संगम में भाई वीर सिंह जी का विशेष योगदान रहा है। इन तीनों शख़्सियतों में सर्वाधिक लोकप्रिय भाई वीर सिंह जी थे, जिन्होंने कौम की उन्नति के लिए हर वर्ग में किए जाने वाले कार्यों की रूप-रेखा तैयार की। चूंकि भाई साहिब विशेषतः पंजाबी साहित्य को धार्मिक ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए जुटे हुए थे, इसलिए उन्होंने पंजाब एण्ड सिंध बैंक की अगुवाई का कार्य सरदार तरलोचन सिंह जी को सौंप दिया। बैंक ने इन्हें मैनेजिंग डॉयरेक्टर नियुक्त किया। भाई वीर सिंह जी इस बैंक को ऊँचाईयों पर देखना चाहते थे। आम लोगों की धारणा थी कि भाई साहिब नरम विचारों के धारक हैं, परंतु भाई साहिब के मन में जहाँ देश व क़ौम को नयी ऊँचाईयों पर देखने की ललक थी, वहीं वे बैंक को भी आगे ले जाने के लिए दृढ़ संकल्प थे। प्रभु-सेवा में लगे भाई साहिब भाई वीर सिंह जी ने बैंक की स्थापना से लेकर विभाजन तक बहुत सेवा की।

भाई साहिब जी के योगदान का वर्णन इस संक्षिप्त लेख में करना असंभव है। इस लेख में पाठकों की जानकारी के लिए हम उनके परिवार का वर्णन एक चार्ट के द्वारा दे रहे हैं, ताकि पता लग सके कि इस विशिष्ट परिवार का देश, कौम व बैंक को सवांरने में कितना बड़ा व महान योगदान है। जहाँ तक पंजाब एण्ड सिंध बैंक की सेवा का सवाल है, उसमें भाई साहब का योगदान पथ-प्रदर्शक के तौर पर सदा सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। बैंक की उन्नति के लिए भाई साहिब के छोटे भाई व पंथ के महान विद्वान डाक्टर बलबीर सिंह जी की देन नहीं भुलाई जा सकती, जिन्होंने 1947 में सरदार तरलोचन सिंह जी के स्वर्गवास के बाद बैंक की बागडोर संभाली।

वंशावली भाई साहिब भाई वीर सिंह जी

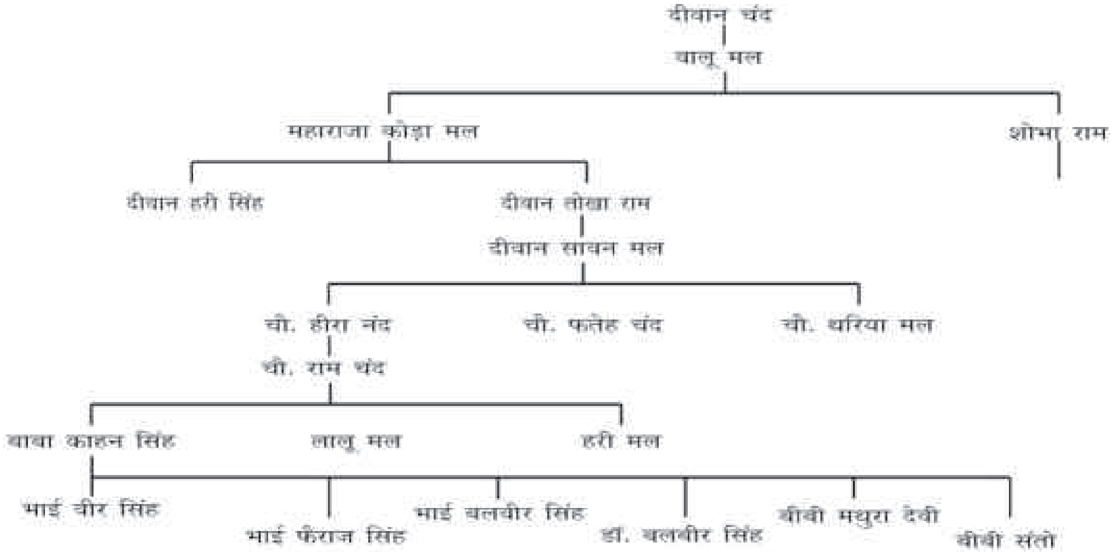

भाई वीर सिंह जी वो महान हस्ती थे, जिन्होंने हमारी प्रमुख शख़्सियतों पर प्रभाव डाला। यही कारण है कि वे क़ौम व हर वर्ग के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। उन्होंने सदैव इस बात का ख़्याल रखा कि जो शख़्स जिस वर्ग या काम की क़ाबलियत रखता है, उसे उसी वर्ग में सेवा करने का अवसर दिया जाए। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के संस्थापक निदेशक के चुनाव के समय भी आपने इसी विचार को वास्तविक रूप दिया। बैंक के निदेशक नियत करने से पहले, बैंक के हिस्से खरीदने के लिए सिखों, खास तौर पर आम पंजाबियों को प्रेरित किया व बैंक के अस्तित्व, महत्व व पहचान का एहसास दिलाया। बैंक के संचालकों को दृढ़ निश्चय करवाया कि इस संस्था का मतलब पंजाब, सिख क़ौम व देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना है। ग़रीबों को ऊँचा उठाना है। बेसहारों को सहारा देना है। छोटे किसान, दुकानदार व छोटे व्यापारियों को आर्थिक उत्थान हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध करानी है। ज़रूरतमंदों की सेवा करना है। आपने धनाढ्य लोगों को प्रेरित किया कि वे बैंक के हिस्से सेवा समझ कर लें न कि व्यापारिक लाभ के लिए। हर एक हिस्सेदार को सेवा समझ कर हिस्सा अपने पास रखने के लिए समझाया। यही कारण है कि आरम्भ में इस बैंक के शेयर कोई बेचता नहीं था, हालांकि खरीदने वाले बहुत थे।

आपकी सरगर्मियों को देखते हुए ब्रिटिश सरकार को भय सताने लगा था। इस बात की पुष्टि सरकार की डायरी की इन पंक्तियों से होती है - *"भाई वीर सिंह ख़ालसा समाचार का एडीटर व मैनेजर है, जो अख़बार अमृतसर से प्रकाशित होता है। पता लगा है कि सिखों में जागृति लाने के लिए वीर सिंह एक मानी हुई हस्ती है, वह तहे-दिल से ब्रिटिश सरकार का बाग़ी है। वह चतुर अरोड़ों में से एक है, जो उस समय चीफ़ ख़ालसा दीवान के कामों में असरदार आवाज रखते हैं। वीर सिंह का सुंदर सिंह मजीठिया पर बहुत असर है। तरलोचन सिंह इनका गाढ़ा दोस्त है। इसको आसानी से सिख व कट्टर ब्रिटिश विरोधी कहा जा सकता है।"*

इस लिखित दस्तावेज से जहाँ एक ओर भाई साहिब का देश प्रेम झलकता है, वहीं दूसरी ओर बैंक को चलाने वाली प्रसिद्ध हस्तियों पर प्रभाव झलकता है। जहाँ भाई साहिब में आध्यात्मिक व धार्मिक ख़ूबियाँ थी, वहीं उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं उनकी दूर-दृष्टि की प्रत्यक्ष मिसालें हैं। उनका विचार था कि धार्मिक संस्थाओं की ज़िन्दगी जैसे परमार्थ पर निर्भर है, वहीं आर्थिक साधनों का होना भी ज़रूरी है।

भाई वीर सिंह जी ने पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्थापना 'स्वदेशी लहर' के रूप में की व आप इस बैंक के संस्थापक निदेशक भी बने। इसमें कोई शक़ नहीं कि आपने समूचे जीवन में कोई भी ओहदा लेने से गुरेज़ किया, पर बैंक के निदेशक का पद, सेवा का साधन समझकर स्वीकार कर लिया। आपने बैंक के रोज़ाना के कार्यों में कभी भी दखलंदाजी नहीं की, पथ-प्रदर्शन से प्रेरणास्रोत बने। आपने साहित्यिक व धार्मिक क्षेत्र में इतने काम किए कि साहित्य के क्षितिज में आपका नाम तारों की तरह चमकने लगा। आपको कई पदवियों से सम्मानित किया गया। आपके साहित्य पर अनेकों परचे लिखे गए, अभिनन्दन ग्रंथ छापे गए, परन्तु पंजाब एण्ड सिंध बैंक को स्थापित करने के लिए जो सेवा का कार्य उन्होंने किया, उसका वर्णन विस्तार सहित किसी भी पुस्तक, पत्रिका या लेख में नहीं मिलता है।

डॉक्टर बलबीर सिंह जी का योगदान

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की रूप-रेखा तैयार करने में व उसको वास्तविक स्वरूप देने में भाई साहिब भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह जी मजीठिया एवं सरदार तरलोचन सिंह जी का महत्वपूर्ण योगदान है। इन तीनों शख्सियतों का जन्म पावन व पवित्र स्थान श्री अमृतसर साहिब में 1872 में हुआ। एक ही साल व एक ही शहर में जन्मे और जवान हुए इन तीनों मित्रों की दूरगामी सोच व दूर-दृष्टि से एक लहर का जन्म हुआ।

वर्ष 1947 का साल भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। देश-विभाजन के बाद जहाँ पूरे देश को भारी धक्का लगा, वहीं पंजाब एण्ड सिंध बैंक भी इससे अछूता नहीं रह सका। बैंक की दो शाखाएं अमृतसर व लुधियाना को छोड़कर बाकी शाखाएं पाकिस्तान में रह गई। मार्च 1947 में फसाद शुरू हो चुके थे। अमृतसर, जहाँ बैंक का हैड-ऑफिस था, इन फसादों के कारण हुई आगजनी से तबाही के कारण बैंक को बड़ा धक्का लगा।

सरदार तरलोचन सिंह जी, जो 1908 से मैनेजिंग डॉयरेक्टर की सेवा निभा रहे थे, वे भी स्वर्ग सिधार गए। बैंक की जायदाद को संभालने के लिए व सारे रिकार्ड को सुरक्षित करने के लिए भाई वीर सिंह जी अगुवाई कर रहे थे। उनके असर रसूख की वजह से मिल्ट्री की सहायता से बैंक का प्रधान कार्यालय, अमृतसर से बदलकर देहरादून भेज दिया गया। देश के विभाजन के बाद पीछे छूट चुकी शाखाओं के ग्राहक जो पाकिस्तान से उजड़ कर भारत आ रहे थे, जिनकी जमा रकम पाकिस्तान में रह गई थी, उनकी जमा बैंक के लिए एक बड़ी चुनौती थी। इस स्थिति को सभांलने के लिए डॉ बलबीर सिंह जी (जो कि भाई वीर सिंह जी के छोटे भ्राता थे।) को यह सेवा सौंपकर बैंक का मैनेजिंग डॉयरेक्टर नियत किया गया। यह स्थान सरदार तरलोचन सिंह जी के स्वर्ग सिधारने के कारण खाली हो गया था।

बिगड़े हालात में कई बैंक लोगों की जमा रकम वापिस करने में असफल रहे, सरकार से मेरीटोरियम ले रहे थे। पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने उजड़े हुए लोगों को बसाने के लिए पूरी रकम देनी आरम्भ कर दी व साथ ही अलग-अलग संस्थाओं व प्रमुखों की सहायता से रिफ्यूजियों को बसाने के लिए दिन-रात एक कर दिया।

डॉ. बलबीर सिंह जी ने इस बैंक को सुंदरता का रूप दिया, जिसका चेहरा विभाजन के कारण लगी आग से झुलस गया था। ये सब कुछ डॉ. साहब की हिम्मत, भरोसा, प्यार, हमदर्दी व लग्न से हुआ। इस प्राप्ति के पीछे आपके बड़े भाई व संत कवि भाई साहिब भाई वीर सिंह जी प्रेरणा-स्रोत बने रहे।

डॉ बलबीर सिंह जी कैमिस्ट्री के उच्च विद्वान, अंग्रेज़ी, संस्कृत व फ़ारसी के अच्छे जानकार थे, पर बैंक के कार्यों को तेज़ करने के लिए हर बात की बारीकी में जाते थे। अपनी खोजी प्रवृति के कारण वे हर बात की बारीकी में जाते थे तथा हर उस मसले को तब तक नहीं छोड़ते थे, जब तक उसका हल नहीं ढूँढ पाते थे। इतने बड़े विद्वान व उच्च लेखक होते हुए भी वे इतने नम्र थे कि सलाह लेते समय छोटे से छोटे आदमी की भी सेवा लेने में नहीं झिझकते थे।

डॉ. बलबीर सिंह जी का जन्म 10 दिसम्बर 1896 को डॉ. चरन सिंह जी के घर हुआ। आप भाई वीर सिंह जी से 24 साल छोटे थे। पिता का साया बचपन में ही सिर से उठ गया। इनकी परवरिश की सारी ज़िम्मेदारी भाई वीर सिंह जी ने बड़ी समझदारी से सभांली।

इन्होंने साईस में बी.एस.सी. कर एम.एस.सी. में दाखिला लिया। अपनी मेहनत, लगन व खोजी प्रवृति के कारण आपको एमएससी पूरी करने के साथ ही लंदन विश्व विद्यालय में पी-एच.डी. में दाखिला मिल गया। इम्पीरियल कॉलेज ऑफ साईस एण्ड टैक्नालॉजी से डी.आई.सी. लंदन विश्व विद्यालय से पी-एच.डी. करके 1913 में भारत वापस आ गए।

इनके पहुँचने से पहले सर सुंदर सिंह मजीठिया ने इनकी मुलाकात पंजाब के गर्वनर के साथ नियत की हुई थी। फैसला हो चुका था कि डॉ. बलबीर सिंह को उच्च पदवी दे दी जाएगी। परंतु देश की आज़ादी के आशिक डॉ बलबीर सिंह जी के अंदर स्वतंत्रता का जज़्बा हिलोरें ले रहा था। सरकारी पदवी लेना तो एक तरफ उन्होंने अंग्रेज़ गवर्नर को मिलना भी मुनासिब नहीं समझा। डॉ. खुदादाद व प्रोफेसर पूरन सिंह की दिली मोहब्बत व प्यार उनको देहरादून खींच कर ले गया। जहाँ आप को कैम्ब्रिज़ परी पैरेटरी स्कूल का प्रिंसिपल बनाया गया। यह पहला मौका था, जब किसी भारतीय के अधीन अंग्रेज़ अध्यापक काम कर रहे थे। इस चुनौती भरी सेवा से उनमें आत्म-विश्वास व दृढ़ निश्चय पक्का किया। दस साल की सेवा के बाद जब वहाँ दून स्कूल खुला, तब आप ने यह स्कूल 1935 में बंद करके फिर विदेश जाने का विचार बनाया। पर भाई साहिब भाई वीर सिंह जी की सलाह के कारण - *"विदेशों में क्या पड़ा है, घर की दाल-रोटी बहुत है।"* आप अमृतसर आ टिके व लिखने, पढ़ने, खोज के काम व कौमी सेवा में जुट गए। 1937 में आपको पंजाब एण्ड सिंध बैंक का डॉयरेक्टर नियत किया गया। जब सरदार तरलोचन सिंह जी का 1947 में देहांत

हुआ तो बैंक का प्रधान कार्यालय देहरादून तब्दील किया गया, तब उनकी जगह आपको बैंक का मैनेजिंग डॉयरेक्टर नियुक्त किया गया। आप ने 3 जनवरी 1960 तक सफ़लता पूर्वक इस सेवा का निवर्हन किया। 14 साल के प्रबंधकीय अनुभव ने उनकी शख़्सियत को और अधिक निखार दिया। जिससे उनके अंदर ऐसे गुण आ गए जो एक वैज्ञानिक व साहित्यकार में मिलना मुश्किल ही नहीं, असंभव था। डॉ. बलबीर सिंह जी की बैंक के प्रति अद्वितीय सेवा का वर्णन करते हुए बैंक के तात्कालीन कानूनी सलाहकार श्री सी.जे.एच. चटर्जी ने लिखा है -

"Dr. Balbir Singh's role as the Managing Director of the Punjab & Sind Bank during the crucial post-partition period is not less remarkable. Eight out of total ten branches of the Bank were left with all their assets in Pakistan. Dr. Balbir Singh with only two branches in India, piloted the Bank through this critical period with admirable skill and determination. Unlike most other comparable institutions of this type. Dr. Balbir Singh succeeded us changing all the liabilities of the bank without needing any moratorium. As the legal advisor of the Bank, I can personally vouch for the great imagination and integrity displayed by Dr. Balbir Singh, in tackling this difficult assignment."

डॉ. एन. एस. रंधावा, आई.सी.एस. ने एक जगह पर लिखा है कि चाहे डॉ. बलबीर सिंह लंबे समय के लिए 1947 से 1960 तक पंजाब एण्ड सिंध बैंक के कामयाबी भरे व्यापारिक कार्यों की अगुवाई करते रहे, पर साथ ही उनकी रचनात्मक शैली ने उनसे लगातार अद्वितीय रचनाएं लिखवाकर एक लेखक के तौर पर भी अपना विशेष स्थान बना लिया था। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के डॉयरेक्टर व मैनेजिंग डॉयरेक्टर के तौर पर उन्होंने जो फ़ैसले लिए उन पर अमल भी किया। उन्हें हर बात स्पष्ट होती थी। जिस विचार के वे धारणी होते उस पर पूरी दृढ़ता, दिलेरी व लगन के साथ टिके रहते। उनकी शख़्सियत की अनोखी बात यह थी कि वे कथनी और करनी में फ़र्क नहीं करते थे। उनके इरादे पक्के होते थे। उनके गर्जन में इतना दम होता था कि बड़ी से बड़ी हस्ती भी उनके सामने आकर बोलने का साहस नहीं करती थी, यानि एक किस्म का निर्मल डर था। वे हर अच्छी बात के लिए डट जाते थे। बैंक की कोई मीटिंग हो या विद्वानों का कोई सेमीनार, धार्मिक एकत्रता हो या गुरुद्वारे में जुड़ी संगत, उनके विचारों से लोग मुग्ध हो जाते थे। अपनी बात में रोचकता लाने के लिए व श्रोताओं को अपने साथ जोड़े रखने के लिए ऐतिहासिक हवालों, प्रचलित टोटकों व हँसी-मज़ाक का सफ़लता सहित प्रयोग करते थे। कई बार गम्भीर व संकट भरी स्थिति को हल्के-फुलके शब्दों से वातावरण स्वच्छ कर देते व हँसी की फुहार माहौल को हल्का-फुलका कर देती।

डॉ. बलबीर सिंह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। सच्चाई तो यह है कि वे अपने आप में व्यक्ति नहीं संस्था थे। वे किसी भी तारीफ़ के मोहताज नहीं थे ओर न ही किसी अवार्ड या सम्मान के इच्छुक। हालांकि संस्थाएं अक्सर सम्मान देने के अवसर की प्रतीक्षा करती रहती थीं। संस्थाएं, मुख्यमंत्री, गर्वनर, वाइस चांसलर सभी उनका सामीप्य प्राप्त करने में गौरव महसूस करते थे। मार्च 1967 में पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार लक्ष्मण सिंह गिल ने सरकार की तरफ से आपको सम्मानित करके खुशी प्राप्त की। ताकालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जी जब 24 जून 1973 को (बैंक की स्थापना-दिवस के उपलक्ष्य में) जब पंचवटी देहरादून पहुँचे तो वे डॉ. बलबीर सिंह को गले लगाकर अपने प्रेम व आपके प्रति सम्मान को प्रकट किया। पंजाबी विश्वविद्यालय के उप कुलपति सरदार कृपाल सिंह ने प्रोफ़ेसर हरबंस सिंह सहित आपके निवास स्थान पर जाकर आपको सम्मानित किया।

डॉ. बलबीर सिंह, एम.डी. को पी-एच.डी. की डिग्री प्रदान करते हुए पंजाब यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर सरदार कृपाल सिंह। साथ में है डॉ. इन्द्रजीत सिंह, प्रो. हरबंस सिंह एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति।

आपने जिन समारोहों में पहुँच कर, उनकी शान बढ़ाई उनमें पंजाब एण्ड सिंध बैंक की चंडीगढ़ शाखा का उद्घाटन समारोह बहुत महत्वपूर्ण है। उस अवसर पर पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जस्टिस गुरनाम सिंह और बैंक के चेयरमैन डॉ. इन्द्रजीत सिंह भी शामिल थे। आप जिन कार्यक्रमों में जाते उन संस्थाओं का क़द ऊँचा हो जाता। आपने न सिर्फ़ पंजाब एण्ड सिंध बैंक की उन्नति व भलाई के लिए सहयोग दिया बल्कि अपनी दूरदर्शिता व कार्य-शैली से देश, कौम व पंथ का नाम रोशन किया। ऐसी महान शख़्सियत के बारे में कहा जा सकता है -

"हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा"

- **सरदार मक्खन सिंह,** भूतपूर्व उप महाप्रबंधक

डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी का अनूठा योगदान

अमृत-वेला, सुबह के तीन बजे, सर्दियों के समय जब लोग ठंड से ठिठुर रहे थे, एक माँ अपने तीन महीने के बच्चे को अपने कंधे से लगा गुरुद्वारे की तरफ जा रही थी। इस माँ ने कभी भी अमृत-वेला छोड़ा नहीं था। जब हर तरफ शांति बिखरी हुई थी। तारे चमक रहे थे, पंछियों की चहचहाहट से वातावरण मनभावन हो रहा था तो ऐसे सुखद व सुहावने माहौल में 'प्रभु प्यारे' गुरु के साथ जुड़ने का अवसर प्राप्त करते हैं। ऐसी ठंड में कोई भी माँ अपने बच्चे को बाहर नहीं निकालती पर यह माँ कोई साधारण माँ नहीं थी और न ही वह बालक अन्य बालकों जैसा था। आम लोग इस भेद को नहीं समझते थे। एक बार किसी ने प्यार भरे गुस्से से माँ से पूछ ही लिया कि इस बच्चे को इतनी ठंड में क्यों मारना चाहती हो? इस प्रश्न का उत्तर था कि गुरु-घर को जाने वाली माँ का गुरु ही रक्षक है।

पिता डॉ. मथुरा लाल को गुरु-घर से विशेष लगाव था। इस सहजधारी परिवार ने अपना मुख सदैव श्री गुरु-ग्रंथ साहिब जी की तरफ रखा तथा श्री गुरु-ग्रंथ साहिब जी को अपना इष्ट माना। ऐसे आदर्श भरे माहौल में पैदा होने व पलने वाला यह बालक हीरा लाल था, जिसने 22 नवंबर 1911 को मूसा खेल में जन्म लिया व फिर हीरा लाल मेंहदीरता से अमृत पान करके इन्द्रजीत सिंह बना, जिन्होंने उच्च-शिक्षा प्राप्त करके बैंक के इतिहास में अपनी जगह ही नहीं बनाई बल्कि हज़ारों घरों में रोशनी जगा कर समूचे समाज की बेमिसाल सेवा करके बेसहारों का सहारा बने।

मीयांवली स्कूल में पढ़ाई के दौरान ही परिवार को नाहन आना पड़ा। आपने नाहन के सरकारी स्कूल से मैट्रिक पास की। दयाल सिंह कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया व बी.कॉम. की डिग्री दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा हेली कॉलेज ऑफ कॉमर्स, लाहौर से डिग्री प्राप्त की। इसी बीच आपकी मुलाकात अचानक डॉक्टर खेमचंद के क्लीनिक में एक महान शख़्सियत सरदार तरलोचन सिंह जी के साथ हुई, जो पंजाब एण्ड सिंध बैंक के मुख्य मैनेजिंग डायरेक्टर थे।

सन् 1960 में पंजाब एण्ड सिंध बैंक के प्रबंधकों के सामने बैंक के भविष्य संबंधी एक बड़ी चुनौती आई क्योंकि कुछ कारणों से बैंक का चलना मुश्किल हो रहा था। देश के विभाजन के बाद बहुत ज़ोर लगाने पर भी शाखाओं की संख्या मुश्किल से 2 से 13 तक ही पहुँची। भविष्य धुंधला देखकर डॉ. बलवीर सिंह व सरदार उज्जल सिंह ने सोचा कि हमारी आशाएं बड़ी ऊँची थी। इसी आशा को मुख्य रख कर ही यह बैंक खोला गया था। देश-विभाजन के साथ बहुत बड़ा धक्का लगा। हिम्मत हारने के स्थान पर डॉ. बलवीर सिंह जो क़ुदरत के आशिक, ललित कला के समालोचक, प्राचीन राग-विद्या के प्रशंसक, आध्यात्मिक भावों के प्रवीण उपासक, मानो कि हर कोमल व श्रेष्ठ विचारों के खोजी व्यक्तित्व थे, ने सरदार उज्जल सिंह के साथ सोच-विचार करने के बाद यह फ़ैसला लिया कि सिख क़ौम की आर्थिक उन्नति के लिए व उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हौसला छोड़ना उचित नहीं। वह इस बैंक द्वारा क़ौम के आर्थिक उत्थान के लिए कोई बड़ा योगदान देना चाहते थे। उस समय के प्रबंधकों ने सोचा कि इस बैंक को बंद करने से पहले एक बार प्रयास ज़रूर करना चाहिए अर्थात् इस बैंक की ज़िम्मेदारी किसी क़ाबिल बैंकर, प्रोफेशनल व लगन से भरे सिख व हिम्मती शख़्सियत को सौंपनी चाहिए।

महामहिम राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. इन्द्रजीत सिंह

ज्ञानी जैलसिंह (मुख्य मंत्री-पंजाब) के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. इन्द्रजीत सिंह

चारों तरफ नज़र दौड़ा के देखा तो केवल डॉ. इन्द्रजीत सिंह की शख़्सियत ही नज़र आई, जो बी.कॉम. एवं चार्टर्ड एकांउटेंट थे और उनको बैंकिंग क्षेत्र में 28 साल का सफल तजुर्बा भी था तथा गुरु पर से जुड़े सिद्की सिख व कुर्बानी, त्याग, सेवा तथा सिमरन की मूर्ति थे एवं इस बैंक को फिर एक महत्वपूर्ण बैंक बनाने के लायक थे। डॉ. इन्द्रजीत सिंह ने ज़िम्मेदारी संभालने से पूर्व मैनेजमेंट की सारी शर्तें तो मान ली पर एक शर्त उन्होंने भी रखी कि प्रबंधक उनके रोज़ाना के काम के लिए पहले तीन साल तक कोई भी रोक-टोक नहीं करेंगे। इस बात का वचन उनको दिया भी गया।

जब जनरल मैनेजर की पदवी देने के लिए आपको बुलाया गया तो सबसे पहले उनको यह ख़्याल आया कि इतने बड़े व सफल बैंक की नौकरी छोड़कर अनिश्चित भविष्य की तरफ़ कदम रखना ख़तरे से खाली नहीं है। इस ज़िम्मेदारी को संभालने के साथ उनके भविष्य का निजी नुकसान भी हो सकता था। एक बड़े महत्वपूर्ण बैंक की उच्च पदवी छोड़कर एक छोटे बैंक को नए सिरे से चलाना था पर गुरु की प्रेरणा व कुर्बानी के जज़्बे से दलील की कसौटी पर ख़रे उतरने वाले तत्वों की परवाह न करते हुए सेवा के मैदान में आ उतरे। इस ख़्याल से कि नीति बनाने व उस पर अमल करने का व इस बैंक का मुखी बनने का अवसर जो गुरु ने बख़्शा है तथा बैंक को चलाने के लिए जिसके आरंभ करने की अरदास जो दरबार साहिब में की गई थी, का कार्य-भार ले लेना चाहिए।

एक और बात जिसने डॉ. इन्द्रजीत सिंह को सबसे अधिक प्रभावित किया वह यह थी कि डॉ. बलवीर सिंह ने इतना महत्वपूर्ण पद संभाला था। 1947 में देश के विभाजन के कारण पंजाब में लगी बंटवारे की आग के कारण बैंक का चेहरा पूरी तरह झुलस गया था। दो ब्रांचों को छोड़ सारी ब्रांचे पाकिस्तान में रह गई थीं। इस झुलसे हुए रूप पर अपना तन, मन, धन न्यौछावर करके जिस तरह डॉ. बलवीर सिंह ने इसे सुंदर रूप दिया, उसकी मिसाल कहीं अन्य नहीं मिल सकती। ऐसी गंभीर हालत में कुछ बैंकों ने जमा-रकम ग्राहकों को वापिस करने के लिए क़ानूनी मोहलत (मॉरिटोरियम) का रास्ता अपनाया। डॉ. साहिब ने सारा ज़िम्मा अपने सिर पर लेकर डिपोज़िटर को पूरे-पूरे पैसे वापिस दिए। इस कार्य में उनको महाराजा पटियाला जैसे शुभचिंतकों की तरफ़ से भी पूरा साथ मिला।

डॉ. इन्द्रजीत सिंह स्वयं लिखते हैं कि *"4 जनवरी, 1960 को मुझे पहली बार डॉ. बलवीर सिंह के दर्शन हुए। जो तारीफ़ कानों से सुनी थी उस दिन उसे प्रत्यक्ष रूप में देखा। डॉ. साहिब बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर थे एवं मुझे उस दिन बैंक के जनरल मैनेज़र का कार्य-भार संभालना था। चार्ज लेते समय मैंने डॉ. साहिब से कहा कि इस कठिन काम का जिम्मा लेते समय मैं यह महसूस कर रहा हूं कि चाहे मेरे में वे गुण कम हैं जिनके द्वारा आपने बैंक को देश के विभाजन के बाद भी अपने कंधों पर लेकर चलाकर दिखाया है पर फिर भी मैं आपको तसल्ली ज़रूर दूंगा कि आपके पद-चिह्नों पर चलकर बैंक की पूरी कामयाबी के लिए कोई कसर नहीं छोडूंगा।"* डॉ. साहिब मेरी बात सुनकर मुस्करा पड़े। मुझे ऐसा लगा कि वह अपनी अनुभवी शक्ति के साथ मेरे भविष्य बाबत मुझे आश्वासन दे रहे हैं। डॉ. इन्द्रजीत सिंह को अगले चौदह साल तक उन्होंने अपनी रहनुमायी से भरी अगुवाई डायरेक्टर के तौर पर दी क्योंकि उनकी सूझ-बूझ व दूर-दृष्टि सचमुच निराली थी।

आपने 4 जनवरी, 1960 को बैंक का चार्ज बैंक के हैड ऑफिस देहरादून में डॉ. बलवीर सिंह जी से लिया। उस समय बैंक आर्थिक पक्ष से कमज़ोर था और डावां-डोल था। कोई आमदनी नहीं थी। भविष्य बहुत धुंधला था परंतु इतिहास बड़ा रोचक व रिवायतें बहुत शानदार थीं। देश की आर्थिक उन्नति की तरफ़ बढ़ने वाली निशानियां नज़र आ रहीं थीं, जिसमें बैंकों को विशेष रोल अदा करना था। सरदार साहिब ने बड़े ठंडे दिमाग से बड़ी सोची-समझी नज़र से सारी स्थिति का जायज़ा लिया। पिछले कार्यों पर नज़र डाली तो इस नतीजे पर पहुँचे कि किसी भी संस्था की सबसे कीमती चीज़ व जायदाद उसका स्टाफ़ होता है। अतः उन्होंने बैंक के कार्मिकों में सेवा की भावना पैदा की व दिलचस्पी भी जगाई। उनके अच्छे निजी भविष्य की कामना करते हुए नई योजनाएं बनाई व उन पर अमल करने के लिए सारे स्टाफ़ में टीम वाला जज़्बा पैदा किया। लगन, मेहनत, विश्वास की वजह से कर्मचारियों को उज्ज्वल भविष्य की किरण दिखाई देने लगी।

बैंक के मुख्य कार्यालय का नई दिल्ली में स्थानांतरण

सबसे पहले वर्ष 1966 में वे बैंक का मुख्य कार्यालय देहरादून से बदल कर देश की राजधानी दिल्ली के केंद्र कनॉट प्लेस में ले आए। यह फ़ैसला उन्नति का आधार बन गया। 1969 में भारत सरकार ने बैंकों के लिए समाज की बेहतरी हेतु दो अहम फ़ैसले लिए-एक, बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया व दूसरा, हर बैंक के मुखिया (चेयरमैन) को ही चीफ़ एक्ज़ीक्यूटिव अफ़सर बना दिया गया। जिसका मतलब था कि हर बैंक के मुखिया की ही पूरी जिम्मेदारी व ताकत थी।

इस नीति के अधीन डॉ. इन्द्रजीत सिंह 1969 में जनरल मैनेजर से बैंक के चेयरमैन व मैनेज़िंग डायरेक्टर बनाए गए। इस तरह बैंक की बिगड़ी स्थिति/दशा को संवारने हेतु काम-काज के क्षेत्र में बढ़ावा करने के लिए उन्हें पूरे अधिकार मिल गए।

खुशक़िस्मती से पूरी आज़ादी के साथ काम करने की प्रेरणा के साथ बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्ज़ जिनमें डॉ. बलवीर सिंह, सरदार हरभजन सिंह 'मान', सरदार सुरिंदर सिंह मजीठिया, सरदार गुरभजन सिंह मान, सरदार करतार सिंह आनन्द, सरदार संत सिंह साहनी व सरदार चरनजीत सिंह आदि से भी उन्हें पूरा सहयोग व योगदान मिला। भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा आपको बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उनको भी डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी की शख़्सियत में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की किरण नज़र आ रही थी। पूरा स्टाफ़ आपके साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़ा था। ये सारे कारण व माहौल, बैंक के उज्ज्वल भविष्य की निशानियाँ थीं।

सरकार की ब्रांचें खोलने की नीति बहुत उदार थी। यह एक बहुत बड़ा अवसर था, जिसने मौक़ा संभाल लिया। डॉ. इन्द्रजीत सिंह की विधि संबंधी योग्यता, दूर-अंदेशी, लम्बा तजुर्बा व शख़्सियत के बहुमुखी गुण बैंक के लिए वरदान साबित हुए। 1969 में जब भारत के 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया तब उस समय निजी क्षेत्र में रह गए बैंकों में पंजाब एण्ड सिंध बैंक सबसे छोटा बैंक था। डॉ. इन्द्रजीत सिंह की योग्य, कुशल व आदर्श अगुवाई में बैंक सफ़लता की सीढ़ियाँ इतनी तेज़ी से चढ़ता चला गया कि 1979 तक देश के निजी क्षेत्र में सबसे बड़ा बैंक बन गया। बैंक की कम समय में इतनी चमत्कारिक उन्नति को बैंकों की प्रशिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया।

इस उन्नति का अगर हम विस्तारपूर्वक अध्ययन करें और इस लेखे-जोखे का हिसाब तथ्यों के आधार पर करें तो हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि वार्षिक उन्नति का प्रतिशत 23 प्रतिशत से बढ़कर 77 प्रतिशत तक पहुँच गया, इतनी तरक्की किसी और बैंक ने नहीं की थी जितनी कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने की थी। 1960 को जमा-रकम जो 2 करोड़ के क़रीब थी वह 1979 में लगभग 500 करोड़ रुपए तक पहुँच गयी। 15 अप्रैल, 1980 को दूसरे पाँच बैंकों के साथ इस बैंक का भी राष्ट्रीयकरण हो गया। इस घटना से सिख क़ौम व पंजाब की आर्थिकता को बहुत धक्का लगा क्योंकि 10 हज़ार के करीब नौजवानों को इस बैंक ने सम्मानपूर्वक नौकरियाँ दी थीं। कर्मचारियों की तनख़्वाह 200 करोड़ रुपए वार्षिक बनती थी, आगे से यह अवसर छिन गया। सिख क़ौम ने नाराज़गी प्रकट की व सरकार ने यह माना कि उनको यह पता नहीं था कि सिख क़ौम के जज़्बात भी इस बैंक के साथ जुड़े हुए हैं नहीं तो राष्ट्रीयकरण का कोई और ढंग अपनाया जाता। सरकार ने एक बात स्वीकार कर ली कि इस बैंक का मुखिया सदैव इसकी ख़्याति के अनुसार ही होगा व इसके स्वरूप को बदला नहीं जाएगा।

तात्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. इन्द्रजीत सिंह

राष्ट्रीयकरण के बाद चाहे पंजाब के लोगों को पहले की तरह नौकरियाँ तो नहीं मिली परंतु जो बैंक में कर्मचारी आ चुके थे उनको उन्नति के शिखर को छूने का शानदार अवसर मिल गया व बहुत से राष्ट्रीयकृत बैंकों में ऊँचे पदों पर पहुँचने का अवसर प्राप्त हुआ।

जिस तेज़ी से देश में इस बैंक ने उन्नति के शिखर को छुआ, उसका भी श्रेय डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी को ही जाता है क्योंकि इन कर्मचारियों की उन्नति व उनका प्रशिक्षण भी डॉ. इन्द्रजीत सिंह के हाथों ही हुआ था। डॉ. इन्द्रजीत सिंह के साथ दूसरे नंबर पर काम करने वाले बैंक के जनरल मैनेजर सरदार औतार सिंह बग्गा थे जिन्होंने दिन-रात कड़ी मेहनत करके बैंक को तेज़ी से सफ़लता की तरफ ले जाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें भी इस बैंक का मैनेज़िंग डायरेक्टर बनाया गया। उनके साथ मिलकर बैंक के जिन उच्चाधिकारियों ने

अपने-अपने क्षेत्रों में योगदान दिया उनके नाम हैं - सरदार हरभजन सिंह, सरदार कुलवंत सिंह एवं सरदार भाग सिंह।

सच्चाई तो यह है कि महाराजा रणजीत सिंह के बाद यदि किसी व्यक्ति ने पंजाब के लोगों की आर्थिक हालत सुधारने में इतनी अहम भूमिका निभाई तो वे हैं डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी।

अब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की खिली गुलज़ार जहाँ देश के कोने-कोने में लगभग 1200 ब्रांचों द्वारा खुशबू फैला रही है वहाँ इसके माली की भी जगह-जगह प्रशंसा हो रही है। यहाँ यह लिखना ठीक ही होगा कि डॉ. इन्द्रजीत सिंह के साथ काम करने वाले बैंक में भर्ती होने वाले कर्मचारी यानि उच्च शख़्सियत बनकर देश के आकाश में चमकते सितारों की तरह रोशनी फैला कर चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर बनके, पंजाब एण्ड सिंध बैंक व डॉ. इन्द्रजीत सिंह का नाम रोशन कर रहे हैं। इनमें से कई अधिकारी अलग-अलग बैंकों के सी.एम.डी. बने, जैसे सरदार औतार सिंह बग्गा (पी.एस.बी.) सरदार हरभजन सिंह (इलाहाबाद बैंक), सरदार दलबीर सिंह (ओरियंटल बैंक ऑफ कामर्स व सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया) सरदार सुरिंदर सिंह कोहली (पी.एस.बी. व पंजाब नैशनल बैंक) सरदार नरेन्द्र सिंह गुजराल (कार्पोरेशन बैंक, पी.एस.बी.), सरदार मनमोहन सिंह कपूर (विजया बैंक), सरदार जी. एस. बेदी (केनरा बैंक, पी.एस.बी.), सरदार सरबजीत सिंह-एम.डी. (बैंक ऑफ पंजाब) तथा कई बैंकों के ई.डी. बने जिनमें श्री सुभाष वोहरा (यूको बैंक), सरदार उपकार सिंह कोहली (देना बैंक) शामिल हैं।) अगर इस महत्वपूर्ण सूची को आगे चलाया जाए तो हम कह सकते हैं कि सरदार दर्शनजीत सिंह, बैंक ऑफ पंजाब एवं सरदार तेजवीर सिंह, बैंक ऑफ पंजाब को इन ओहदों पर ले जाने वाले भी डॉ. इन्द्रजीत सिंह ही थे।

शिक्षा के प्रचार व प्रसार की तरफ भी उनका बहुत ध्यान था। हर सिख स्कूल व कक्षा को साफ़-सुथरा प्रबंधन देने के लिए उन्होंने बहुत यत्न किए। कई स्कूल व कॉलेज खोले व संस्थाओं की उन्नति के लिए उन्होंने कई अच्छे प्रबंध किए व भरपूर योगदान दिया। जैसे गुरु हरकृष्ण पब्लिक स्कूल, गुरु नानक फाउंडेशन, चीफ़ खालसा दीवान, भाई वीर सिंह साहित्य सदन, गुरमत ट्रेनिंग कॉलेज एवं अनेक शैक्षिक संस्थानों की सेवा संभाली। श्री दरबार साहिब अमृतसर की परिक्रमा में मशीन द्वारा ठंडे जल की सेवा भी गुरु महाराज ने उनसे ली। वे बुद्धिजीवियों, विद्वानों, लेखकों व कलाकारों की सरपरस्ती करते रहे। उनका चमत्कार ही था कि सरदार मक्खन सिंह जी को बैंक में नियुक्त कर बैंक के वार्षिक कैलेण्डर निकालने की परम्परा शुरू की, जिसमें सिख कौम व सिख धर्म की गई पूरी जानकारी सचित्र दी जाती थी तथा बैंक की उन्नति के बारे में पूरा विवरण दिया जाता था। सिख धर्म पर ऐतिहासिक सचित्र पुस्तकों को छपवाकर लाखों लोगों में वितरित करना कोई आसान काम नहीं था।

दिलचस्प बात यह है कि राष्ट्रीयकरण के बाद भी डॉ. इन्द्रजीत सिंह बैंक के मुखिया रहे व 2 जनवरी 1982 को सफलता सहित 70 साल की उम्र में एक मिसाल कायम करके सेवा-मुक्त हो गए। आज तक देश के इतिहास में इस उम्र तक किसी व्यक्ति को एक्सटैंशन नहीं मिली जितनी कि डॉ. साहिब को मिली।

सेवा-मुक्त होने के बाद भी उन्होंने लोक-कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। राष्ट्रीयकरण के पश्चात् पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने जहाँ अनेकों व्यक्तियों को रोज़गार दिया, वहीं देश की आर्थिक उन्नति में भी सहयोग दिया। इतना ही नहीं उन्होंने पहला मौका मिलते ही निजी क्षेत्र में एक और बैंक 'बैंक ऑफ पंजाब' स्थापित करके एक नया मील का पत्थर रखा यह उनकी लाजवाब सफलता थी।

देश के आर्थिक भाईचारे व धार्मिक क्षेत्रों में ज़रूरी योगदान एवं अनोखी देन देकर आपने सम्पूर्ण सेवा की, इसे देखते हुए श्री गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर ने आपको डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान की। आप सारे देश में पहले बैंकर हैं जिनका इस तरह सम्मान किया गया है। मरणोपरांत 'शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' ने आप जी को 'पंथ-रतन' की उपाधि के साथ सम्मानित किया।

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर में डॉक्टरेट की डिग्री लेते हुए डॉ. इन्द्रजीत सिंह।

जब हम डॉ. इन्द्रजीत सिंह की ऐतिहासिक देन के बारे में बात करते हैं तो निःसंदेह हमारा ध्यान उनकी देन की तरफ चला जाता है, जिन्होंने आपकी सफलता में सहयोगी के रूप में योगदान दिया है। प्रसिद्ध विद्वान् समरसन ने ठीक लिखा है कि किसी व्यक्ति की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके बचपन में उसकी माता का क्या योगदान है। आपके जीवन में बचपन को संवारने का श्रेय आपकी

माताजी को है, वह महान हैं। इसी तरह आप जी की धर्मपत्नी सरदारनी दमयंती कौर ने लगातार मेहनत एवं सिखी सिदक के साथ घर की ज़िम्मेदारियों को भरपूर संभाला व डॉ. साहिब को सदा इन ज़िम्मेदारियों से मुक्त रखा। जाति तौर पर डॉ. साहिब के सारी उम्र का साथ निभाते हुए वे सदा उनकी सेवा में तत्पर रहीं व सलाह भी देती रहीं। साथ ही 'सिख वूमन ऐसोसिएशन' के प्रधान के तौर पर सिख औरतों को दिल्ली में जत्थेबंद किया ताकि वे भी सिख परंपरा को कायम रखने में प्रयत्नशील रहें।

गुरुओं के शताब्दी वर्ष और बैंक

जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहड़ा प्रधान 'शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' ने उनको श्रद्धांजलि देते हुए ठीक ही कहा था कि इन शताब्दियों को ठीक ढंग से मनाने के लिए जब शिरोमणी कमेटी ने बीड़ा उठाया तो उन्होंने अपना हाथ बढ़ा कर उनके आगे रखा व किसी चीज़ की कमी नहीं आने दी। यह शताब्दियाँ जहाँ सफलता सहित मनाई गई वहीं कौम में चढ़दी कला भी आई। पंजाब एण्ड सिंध बैंक को अधिक लाभ भी हुआ। जहाँ तक कि हर शताब्दी पंजाब एण्ड सिंध बैंक की उन्नति का अगला पड़ाव साबित हुई। 1966 में जब श्री गुरु गोबिंद सिंह महाराज का 300 साला प्रकाश-उत्सव मनाने का समय आया तो आप उस खुशी में बैंक के मुख्य कार्यालय को देहरादून से तब्दील करके देश की राजधानी दिल्ली में ले आए ताकि पूरे कार्यक्रम में ठीक तरह से योगदान दिया जा सके।

1969 में जब गुरु नानक देव जी का 500 साला प्रकाश - उत्सव का अवसर आया तो बैंक की तरफ से योगदान देते हुए गुरु साहिब के नाम पर बन रही गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की पहली शाखा कॉलेज परिसर में खोलकर नाता जोड़ा। 1975 में श्री गुरु तेग़ बहादुर जी का 300 साला शहीदी पर्व मनाने के लिए जब सिखों और देश ने फ़ैसला किया तब सबने मिल कर बैंक की तरफ़ से उनकी अगुवाई में गुरु जी की सचित्र जीवनी पंजाबी, हिंदी व अंग्रेज़ी भाषा में 1 लाख प्रतियाँ छपवाकर बाँटी।

शहीदी मार्ग व सिख मार्ग पर चलने वाले रास्ते पर 300 स्वागत गेट बैंक की तरफ से बनवा कर गुरु जी को ऐतिहासिक श्रद्धांजलि पेश की। पुरातन ग्रंथों की सेवा-संभाल के, दर्शन करवा के संगतों की आशीष प्राप्त की। हर जगह चाय के लंगर इस बात का प्रतीक हैं कि संगतों की सेवा के लिए पंजाब एण्ड सिंध बैंक सदैव तत्पर है। इस अवसर पर भारत सरकार की तरफ से डाक-टिकट जारी करवाने के लिए सारे प्रयत्न बैंक के ही थे, जिसको गुरु महाराज ने सफ़लता बख़्शी।

1977 में जब श्री गुरु रामदास जी की बसाई नगरी अमृतसर का 400 साला स्थापना दिवस मनाने का कार्यक्रम बना तो पंजाब एण्ड सिंध बैंक के चेयरमैन को ही स्वागत कमेटी का चेयरमैन बनाया गया। आप जी की अगुवाई में सीनियर अधिकारी बैंक के जनरल मैनेजर सरदार औतार सिंह बग्गा कई दिनों तक अमृतसर में रहे व सारे समागमों को सफल बनाते रहे। लाखों की गिनती में जुड़ी संगत के लिए चाय के लंगर की सेवा भी बैंक को बख़्शी गई। यहीं चीफ़-ख़ालसा दीवान की प्रेरणा के साथ 400 साला स्थापना दिवस मनाते हुए बैंक की 400वीं ब्रांच भी उस शहर में उसी दिन खोली गई। इसके साथ ही बैंक द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन सरदार प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री पंजाब ने किया। यहाँ पंजाब सरकार के आदेश पर कई संस्थाओं द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में सरकार ने पंजाब एण्ड सिंध बैंक को सैकेंड बेस्ट अवार्ड से सम्मानित किया।

वर्ष 1979 में कौम को एक ऐतिहासिक मौका मिला, जब गोईंदवाल साहिब में श्री गुरु अमरदास जी का 500 साला प्रकाश उत्सव बड़ी श्रद्धा, सम्मान, उल्लास व जोश से मनाया गया। इस अवसर पर जहाँ बैंक ने महाराज की सचित्र जीवनी कई भाषाओं में छपवा के संगतों को भेंट की, वहीं सारी संगत के लिए चाय-पानी की सेवा व विशेष मेहमानों की देखभाल की ज़िम्मेदारी को बड़े सुचारु ढंग के साथ निभाया। यहाँ प्रदर्शनी भी लगाई गई। जिसका उद्घाटन केंद्रीय मंत्री सरदार सुरजीत सिंह बरनाला ने किया। इसमें पंजाब के मुख्य-मंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल व शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार गुरचरण सिंह तोहड़ा ने लिखित तौर पर बैंक की सराहना की। 500 साला दिवस मनाने की खुशी में बैंक की 500वीं ब्रांच का उद्घाटन उसी स्थान गोईंदवाल साहिब में हुआ।

डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी द्वारा पिछले कई दशकों में किए गए काम व उनकी तरफ से दिए गए योगदान, लेखा-जोखा आदि को इस लेख में दर्शाना मुश्किल ही नहीं असम्भव है। समूचे तौर पर नज़र डाली जाए तो जो भी शताब्दियों पर बैंक की ओर से सिख इतिहास व धर्म के साथ संबंधित मुद्दों पर प्रदर्शनियाँ लगाई गई, उनमें उनका सहयोग महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि इतना महान है जो इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

- सरदार मक्खन सिंह

सेवानिवृत उप महाप्रबंधक

बैंकिंग उद्योग को पंजाब एण्ड सिंध बैंक की देन

श्री हरभजन सिंह
कार्यकारी निदेशक - यूको बैंक, पंजाब नैशनल बैंक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक - इलाहबाद बैंक

श्री एस. एस. कोहली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक - पंजाब नैशनल बैंक

डॉ. दलबीर सिंह
कार्यकारी निदेशक - देना बैंक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक -
ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
एवं सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

श्री एस. सी. वोहरा
कार्यकारी निदेशक - देना बैंक

श्री एम. एस. कपूर
मुख्य सतर्कता अधिकारी - यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,
इंडियन ओवरसीज बैंक
कार्यकारी निदेशक - पंजाब एण्ड सिंध बैंक
ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, सिंडीकेट बैंक

श्री एन. एस. गुजराल
कार्यकारी निदेशक - कॉर्पोरेशन बैंक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक -
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

श्री यू. एस. कोहली
मुख्य सतर्कता अधिकारी - यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
कार्यकारी निदेशक - देना बैंक

श्री जी. एस. वेदी
कार्यकारी निदेशक - केनरा बैंक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक - पंजाब एण्ड सिंध बैंक

श्री सरबजीत सिंह
कार्यकारी निदेशक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
एवं सी.ई.ओ. - बैंक ऑफ पंजाब

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

(1908-2013)

डॉ. बलबीर सिंह

डॉ. इन्द्रजीत सिंह

श्री मोहिन्द्र सिंह

श्री औतार सिंह बग्गा

श्री एम. एस. चाहल *(आई.ए.एस.)*

पद्मश्री श्री के. एस. बैंस *(आई.ए.एस.)*

श्री एस. एस. कोहली

श्री एन. एस. गुजराल

श्री आर. पी. सिंह *(आई.ए.एस.)*

श्री जी. एस. वेदी

श्री डी. पी. सिंह *(आई.ए.एस.)*

स्वर्णिम यादें

ख़ालसा कॉलेज काउंसिल (15 जनवरी, 1950) के सदस्यों के साथ भाई साहिब भाई वीर सिंह, डॉ. बलबीर सिंह, सरदार सुरिंदर सिंह मजीठिया, सरदार मंगल सिंह 'मान', सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया, प्रो. तेजा सिंह, प्रिंसीपल जोध सिंह, सरदार सोहन सिंह, श्रीमती इन्द्रजीत कौर, सरदार प्रताप सिंह एवं बैंक से जुड़ी महान विभूतियाँ।

भारत सरकार द्वारा ग़रीबों के उत्थान के लिए तैयार किए गए 20सूत्री कार्यक्रम के बैंक के कैलेंडर में अपना चित्र देखते हुए, भारत की तात्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ डॉ. इन्द्रजीत सिंह।

डॉ. इन्द्रजीत सिंह बैंक का कैलेंडर रिलीज़ करते हुए। बैंक कार्मिकों के साथ डॉ. साहिब की पत्नी श्रीमती दमयंती कौर तथा श्री देवेन्द्र सिंह एवं श्री बोधराज, आर्टिस्ट।

राम बाग, अमृतसर में बैंक के एक्सटेंशन काउंटर के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित डॉ. इन्द्रजीत सिंह, सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया, जत्थेदार संतोख सिंह, सरदार औतार सिंह बग्गा, सरदार संत सिंह साहनी, सरदार गुरमुख सिंह, सरदार शमशेर सिंह, सरदार करतार सिंह आनन्द व अन्य गणमान्य व्यक्ति।

बैंक के उत्थान के लिए विदेश यात्रा पर जाने से पूर्व डॉ. इन्द्रजीत सिंह अपने परिवार व बैंक के उच्चाधिकारियों के साथ।

बैंक की 400वीं शाखा के उद्घाटन अवसर पर डॉ. इन्द्रजीत सिंह, जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहड़ा, सरदार प्रकाश सिंह बादल व सरदार मक्खन सिंह।

शाखा हेमकुंट कालोनी, नई दिल्ली के उद्घाटन अवसर पर आयोजित कीर्तन में शामिल डॉ. इन्द्रजीत सिंह, सरदार औतार सिंह बग्गा, सरदार मक्खन सिंह व प्रसिद्ध रागी साहिबान।

वर्ष 1973 में दरबार साहिब अमृतसर में 'कार सेवा' करते हुए डॉ. इन्द्रजीत सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दमयंती कौर, सरदार औतार सिंह बग्गा व उनकी धर्मपत्नी, सरदार संत सिंह, बैंक निदेशक एवं सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया व अन्य गणमान्य व्यक्ति।

श्री गुरु अमरदास जी के 500वें प्रकाश उत्सव के शुभ अवसर पर डाक-टिकट जारी की गई। इस अवसर पर बैंक के तात्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, डॉ. इन्द्रजीत सिंह। मंचासीन तात्कालीन लोकसभा स्पीकर सरदार गुरदयाल सिंह ढिल्लों, तात्कालीन राष्ट्रपति श्री फ़ख़रूद्दीन अली अहमद, पंजाब के तात्कालीन गवर्नर डॉ. शंकर दयाल शर्मा।

डॉ. इन्द्रजीत सिंह, शाखा डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली का उद्घाटन करते हुए।

प्रिंसिपल सतबीर सिंह के साथ विचार-विमर्श करते हुए डॉ. इन्द्रजीत सिंह। साथ में हैं सरदार औतार सिंह बग्गा, सरदार हरभजन सिंह व अन्य गणमान्य व्यक्ति।

यादों के झरोखे से......

पंजाब एण्ड सिंध बैंक (पीएसबी) जो कि 'प्यारा साडा बैंक' तथा 'पौधा सदा बहार' के विशेषणों से भी सुप्रसिद्ध है, का श्रीगणेश 24 जून, 1908 को, गुरु की नगरी अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में 'वाहेगुरु' के चरणों में अरदास करने के पश्चात् हुआ था। इस संस्था के संस्थापक हैं-'चीफ खालसा दीवान' जो कि सिखों की एक धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षिक संस्था है। तब इस बैंक के तीन संचालक एवं स्तंभ थे-पदमश्री श्री डॉ. भाई वीर सिंह, 'सर' सुंदर सिंह मजीठिया एवं डॉ. बलबीर सिंह। इस संस्था का मुख्य लक्ष्य था-अल्पसंख्यक सिख समाज में से ग़रीब एवं पिछड़े वर्ग का आर्थिक उत्थान।

धीरे-धीरे बैंकिंग का यह छोटा सा प्यारा पौधा विकसित होने लगा। सन् 1947 में देश विभाजन के तूफ़ान से इस पौधे को बड़ा झटका लगा परंतु इसने बड़ी हिम्मत से इस आफ़त का सामना किया और फिर से फलने-फूलने लगा। इसका मुख्य कार्यालय अमृतसर से देहरादून में स्थानांतरित हो गया। सन् 1968 में जब डॉ. इन्द्रजीत सिंह ने इसके अध्यक्ष पद का कार्य-भार सम्भाला तो उन्होंने अनुभव किया कि बैंक के विकास के लिए इसका मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में स्थित होना चाहिए ताकि भारतीय रिज़र्व बैंक तथा वित्त-मंत्रालय से संपर्क रखने में सुविधा हो सके। वैसे भी दिल्ली एक महानगर होने के नाते यहाँ विकास एवं उन्नति के अवसर देहरादून की अपेक्षा अधिक हैं। उन्होंने बड़ी ही सूझ-बूझ व हिम्मत से रातों-रात बैंक का मुख्य कार्यालय एच. ब्लॉक, कनॉट प्लेस में स्थानांतरित करवा दिया। बैंक का यह एक छोटा सा पौधा दिन प्रतिदिन विकसित होने लगा और आज यह एक भीमकाय वृक्ष का रूप धारण कर चुका है जिस की ठंडी छाया तथा मीठे फलों का रसास्वादन सैंकड़ों अधिकारीगण, सहस्त्रों कर्मचारी तथा लाखों ग्राहक कर रहे हैं। 31 मार्च, 2013 तक इसका कुल व्यापार 1,22,485 करोड़ रुपये हो चुका है जो कि प्रशंसनीय उपलब्धि है।

सन् 1969 में 14 मुख्य निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ था। जहाँ अन्य बैंक सरकारी कार्यालय बन कर रह गए थे जिनमें 'ग्राहक सेवा' की दशा अत्यंत ख़राब हो गई थी। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का लक्ष्य था - शीघ्र, नम्र तथा निजी ग्राहक सेवा। लगभग प्रति सप्ताह बैंक की एक शाखा भारत के कोने-कोने में खुलने लगी। उस समय बैंक के चार मुख्य अधिशासी थे : डॉ. इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष, सरदार औतार सिंह बग्गा, महाप्रबंधक, सरदार हरभजन सिंह, सचिव तथा सरदार भाग सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक। उनके नेतृत्व में अधिकारी तथा स्टाफ़ - सदस्य धार्मिक भावना से बैंक में कार्य करते थे।

राहत के पलों में भी बैंक में काम-काज जारी रहता था। डॉ. इन्द्रजीत सिंह, सरदार औतार सिंह बग्गा, सरदार भाग सिंह सरदार सरबजीत सिंह, सरदार दलबीर सिंह एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

उस वर्ष के अंत में मैं किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति को साथ लिए बिना किसी जान-पहचान के बैंक के तात्कालीन मुख्य कार्यालय, एच. ब्लॉक, कनॉट सर्कस में डॉ. इन्द्रजीत सिंह जी से मिलने गया। जिस सुरक्षा कर्मचारी के हाथों मैंने अपनी दर्शनार्थी-स्लिप अध्यक्ष महोदय के पास भेजी थी, वही कर्मचारी संदेश लेकर आ गया और कहा - 'चेयरमैन साहिब', त्वाहनू बुला रहे हनू'। अंदर जाकर क्या देखता हूं - एक बड़ी कुर्सी पर सुशोभित हैं - एक सरदार साहिब, गोरा-चिट्टा चेहरा, श्वेत पगड़ी, श्वेत दाढ़ी, श्वेत सफारी सूट पहने हुए, होंठों पर मंद-मंद मुस्कान। वह संत रूप में दृष्टिगोचर हो रहे थे। देखते ही मैं मंत्र-मुग्ध हो गया। मैंने बड़ी नम्रता से अपनी मुलाकात का उद्देश्य बताया। उन्होंने बड़े धैर्य से मेरी बात सुनी तथा एक क्षण सोचने के पश्चात् मुझे कुछ माह के बाद मिलने को कहा। मैं बड़ा अच्छा अनुभव लेकर बाहर आ गया।

डॉ. साहिब के आदेशानुसार, कुछ माह बीतने पर मैं पुनः उनसे मिलने के लिए गया। उन्होंने अत्यंत विनम्रता से उस व्यक्ति विशेष के लिए मेरी सिफ़ारिश अस्वीकार करने के लिए खेद प्रकट किया। पर साथ ही मुझ से कहने लगे-'तुसी क्यों नहीं साड़ा बैंक ज्वॉइन कर लैंदे'?मैं तो पहले ही किसी दूसरे बैंक में सेवारत था। अतः मैंने उत्तर दिया - 'सर, मैं ते अपने बारे सोच्या ही नहीं।' डॉ. साहिब कहने लगे, 'सोचण दी कोई लोड़ नहीं उत्ते जाके 'वीर जी' कोलों इंटरव्यू लैटर लै लो। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। दो दिन पश्चात् ही साक्षात्कार हुआ

और उन्होंने मुझे उसी समय कह दिया, *"You are selected as a Sub-Manager; Please join at the earliest"* मैं उनके इतने शीघ्र निर्णय से अत्याधिक प्रभावित हुआ तथा 12 जनवरी 1971 को बैंक की एच. ब्लॉक, कनॉट सर्कस शाखा में कार्य-ग्रहण कर लिया। वह उस समय बैंक की सबसे बड़ी शाखा थी। दो सप्ताह के बाद मुझे उसी शाखा के शाखा प्रबंधक के पद पर कार्य करने का आदेश मिला। मैंने इस बैंक की लेखा-प्रणाली एवं कार्य-प्रणाली से पूर्णरूपेण अभ्यस्त होने के लिए कुछ समय मांगा तो तात्कालीन क्षेत्रीय प्रबंधक सरदार भाग सिंह जी ने, मुझे अपना कोई निजी अनुभव सुनाकर उसका निष्कर्ष बताया कि 'जदों सिर ते पैंदी है ते आदमी जल्दी सिखदा है'। मैंने उनकी आज्ञा का पालन करते हुए परमपिता परमात्मा के चरणों में प्रार्थना करके उस शाखा का कार्य-भार सम्भाल लिया।

समय व्यतीत होता गया। बैंक, डॉ. इन्द्रजीत सिंह के नेतृत्व में दिन-दुगनी रात चौगुनी उन्नति करता गया। सन् 1970 से 1980 तक पूरा एक दशक इस बैंक का विकास सारे निजी बैंकों से सर्वाधिक था तथा इसकी शाखाएं एवं प्रसिद्धि रूप सुगंध पूरे भारत में फैल गई थी। इस असाधारण विकास पर टिप्पणी करते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा था, 'सिख एक जुझारू कौम है। वास्तव में उन्होंने बैंकिंग क्षेत्र में भी हाल ही में प्रवेश किया है और अपनी परम्परा अनुसार *Banking Field* को भी *Battle Field* (रण-भूमि) समझ कर कार्य किया है तथा कर रहे हैं।'

अंततः 14 अप्रैल, 1980 को निजी क्षेत्र के 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया। उनमें सबसे बड़ा बैंक होने के नाते पहला नम्बर हमारा था। बैंक में एक प्रकार की शोक की लहर दौड़ गई क्योंकि भविष्य का अनिश्चित चित्र सबके मन में था। धीरे-धीरे अधिकारी तथा कर्मचारी नए वातावरण में अभ्यस्त होते चले गए। डॉ. इन्द्रजीत सिंह के सेवा-निवृत्त होने पर भारत सरकार के वित्त-मंत्रालय के आदेशानुसार स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, चण्डीगढ़ के महाप्रबंधक श्री मोहिन्द्र सिंह ने इस बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का कार्यभार सम्भाला। उन्होंने इस बैंक की कार्य-प्रणाली एवं प्रक्रिया को सुचारु रूप दिया। तत्पश्चात् बैंक के अपने महाप्रबंधक सरदार औतार सिंह बग्गा को भारत सरकार के वित्त-मंत्रालय ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया जिसका स्टाफ़ ने जी भरकर स्वागत किया। तत्पश्चात् सरदार एम. एस. चाहल, (आई.ए.एस.), सरदार के. एस. बैंस, (आई.ए.एस.), सरदार सुरिन्दर सिंह कोहली, सरदार नरेन्द्र सिंह गुजराल, सरदार आर. पी. सिंह (आई.ए.एस.) तथा अब श्री डी. पी. सिंह (आई.ए.एस.) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के पद पर सुशोभित हैं। सबने बैंक की प्रगति में पूरा योगदान दिया।

भारत सरकार के वित्त-मंत्रालय तथा भारतीय रिज़र्व बैंक ने समय-समय पर जो भी विभिन्न दिशा-निर्देश दिए, बैंक ने उनका बड़ी ही मुस्तैदी तथा शीघ्रातिशीघ्र पूर्णरूपेण अनुपालन किया, चाहे वो दिशा-निर्देश ग्रामीणों, किसानों, अल्पसंख्यकों, लघु उद्योगों, लघु व्यापारियों, विकलांगों, विद्यार्थियों, निजी कार्यरत पेशेवरों, भूतपूर्व रक्षा कर्मिकों, वरिष्ठ नागरिकों इत्यादि किसी भी समूह के लिए थे। इसी प्रकार भारतीय रिज़र्व बैंक ने विभिन्न प्रकार की शाखाएं उदाहरणार्थ-ग्रामीण शाखाएं, औद्योगिक अर्थव्यवस्था संस्थाएं, विदेशी विनिमय संस्थाएं इत्यादि किसी भी प्रकार की शाखाएं खोलने के लिए बैंकों को निर्देश दिए। पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने उन दिशा-निर्देशों को अतिशीघ्र एवं धार्मिक भावना से क्रियान्वित किया। बैंक की एक बड़ी विशेषता है - इसके योग्य अधिकारियों द्वारा अतिशीघ्र निर्णय तथा शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वयन। दूसरी विशेषता है -स्टाफ़ बड़ा योग्य, सभ्य तथा परिश्रमी है। तीसरी विशेषता है - ग्राहक सेवा की गुणवत्ता। चौथी विशेषता है - स्टाफ़ में भ्रातृभाव। चाहे बैंक मूलतः एक सिख संस्था थी परंतु इसमें ग़ैर-सिख स्टाफ़ तथा ग्राहकों के साथ पूर्ण धर्म-निरपेक्षता का व्यवहार रहा है।

आज पंजाब एण्ड सिंध बैंक भारत के राष्ट्रीयकृत बैंकों में एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। योग्य एवं प्रगतिशील नेतृत्व में तथा परिश्रमी स्टाफ़ के कारण इसका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल दृष्टिगोचर होता है। मुझे केवल आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास भी है कि यह लोकप्रिय संस्था दिन-प्रतिदिन चहुँमुखी विकास-पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

- जोगिन्दर पाल सिंह
भूतपूर्व सहायक महाप्रबंधक

बैंक का भक्ति संगीत संग्रहालय

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जिस समय बैंक तेज़ी से उन्नति के सोपान चढ़ रहा था, डॉ. इन्द्रजीत सिंह ने इसे ईश कृपा मानते हुए 'भलो-भलो रे कीर्तनिया' विषय लेकर पुरातन रागियों, भाई मरदाना, भाई बाला, सत्ता और बलवंड से लेकर भाई समुंद सिंह की पेंटिंग्स को शामिल कर एक ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक टेबल कैलेंडर बनवाया था। इस प्रकाशन से मानव-जगत को यह बताने का प्रयास किया गया कि भक्ति संगीत श्री गुरु ग्रंथ साहिब का एक अभिन्न एवं अटूट अंग है, जो किसी व्यक्ति विशेष का नहीं बल्कि समस्त सृष्टि का संयुक्त आध्यात्मिक आधार है। इसको ध्यान में रखते हुए बैंक की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर देश पर्यंत कीर्तन दरबार आयोजित करवाए गए।

वर्ष 1994 में बैंक के तात्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पदमश्री श्री के. एस. बैंस, (आई.ए.एस.), जो उस समय "पंजाब कीर्तन दरबार", जालंधर के प्रधान भी थे, ने बैंक में एक "भक्ति संगीत संग्रहालय" स्थापित कर, उसमें रागों पर आधारित कीर्तन करने वाले रागियों, रबाबियों व शबद कीर्तन करने वाले गुणवान कीर्तनियों के लुप्त हो रहे खजाने को सुरक्षित करने के उद्देश्य से शबद-कीर्तन आदि संग्रहित करने का निर्णय किया। बैंक द्वारा अहम निर्णय लिया गया कि 'पंजाब कीर्तन दरबार' से स्थान प्राप्त करके इसका आरंभ किया जाए।

भक्ति संगीत संग्रहालय की स्थापना के लिए प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित बैठक का दृश्य।

प्रमुख समाचार-पत्रों के माध्यम से सभी समाज सेवी संस्थाओं, संतों, महापुरुषों से अपील की गई कि जिन संगीत प्रेमियों के पास शबद कीर्तन/भजन टेप, एल.पी., सी.डी., डी.वी.डी., कैसट आदि का रिकार्ड हो तो वे बैंक द्वारा बनाए गए संग्रहालय में संग्रहण के

लिए उपलब्ध करवा दें, ताकि इनकी रिकार्डिंग कर इन्हें महफ़ूज़ किया जा सके। यह भी निर्णय लिया गया कि इस पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत संग्रहालय में कोई भी भक्ति संगीत प्रेमी अपनी इच्छानुसार भक्ति संगीत सुन सकता है तथा अपनी पसंद के शबद आदि की रिकार्डिंग भी प्राप्त कर सकता है।

चारों ओर से इस प्रयास की सराहना हुई और सहयोग मिला। पंजाब सरकार तथा भारत सरकार के सहयोग से पाकिस्तान सरकार से संपर्क कर लाहौर एवं कराची से भी कीर्तन रिकार्ड मंगवाए गए। इस योजना में और तेज़ी लाने के लिए एक विशेषाधिकार कमेटी का भी गठन किया गया, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों गणमान्यों तथा बैंकों के उच्चाधिकारियों को शामिल किया गया। विद्वानों, समाचार - पत्रों के सम्पादकों तथा समाज के प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्तियों ने बैंक के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अमृतवेला रागों पर कैसट तैयार करवाने तथा तंती साजों का प्रयोग बढ़ाया जाने पर विचार किया गया। इस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर स्पूल, कैसेट व रिकार्डस को आधुनिक तरीके से सी.डी. में बदलने व कापी करने के लिए मशीनें खरीदी गई।

इस संग्रहालय ने सभी रागियों के निर्धारित रागों पर भक्ति संगीत गायन किए गए शबदों को एकत्रित करके एक महत्वपूर्ण पुस्तक भी प्रकाशित की, जिसमें यह सुविधा है कि रागी का नाम बताने पर उनके द्वारा गाए गए समस्त शबदों तथा उनकी पहली लाईन से रागियों का ब्यौरा मिल जाता है। जब सरदार एस. एस. कोहली बैंक के चेयरमैन बने तो उन्होंने भी इस योजना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और इस योजना को आगे बढ़ाया।

अमृतसर में इस अद्वितीय भक्ति संगीत संग्रह के बारे में एक प्रेस कान्फ्रेंस हुई। 23 सितंबर, 1996 को पंजाबी ट्रिब्यून तथा अंग्रेज़ी ट्रिब्यून में बैंक के तात्कालीन चेयरमैन स. एस. एस. कोहली का साक्षात्कार छपा - जिसमें उन्होंने संग्रहालय के बारे में विस्तार से जानकारी दी कि इस वातानुकूलित, आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली से युक्त संग्रहालय में रिकॉर्ड व कैसेटों की प्रति तैयार करने के लिए विदेशी आधुनिक मशीनें स्थापित की गई हैं।

इस संग्रहालय के कीर्तन-स्थल में एक साथ दो सौ लोग बैठकर शबद-कीर्तन/भक्ति संगीत का आनन्द ले सकते हैं। कोई भी व्यक्ति अपना मनपसंद शबद/भक्ति संगीत सुन सकता है और उसकी रिकॉर्डिंग भी प्राप्त कर सकता है। संग्रहालय में देश-विदेशों से गुरुवाणी तथा भक्ति संगीत के कैसेट भी एकत्र किए गए हैं। इस संग्रहालय में इस समय लगभग 2000 शबद जो निर्धारित रागों में और प्रसिद्ध रागियों ने गाए हैं, उपलब्ध हैं। इन शबदों में से लगभग 100 मास्टर कैसेटों में तैयार किए जा चुके हैं। इस संग्रहालय में प्रो. परमजोत सिंह के नेतृत्व में एक कीर्तन अकादमी भी चलाई जा रही है जो हर रोज़ कीर्तन का प्रशिक्षण देती है। प्रो. परमजोत सिंह को यह हुनर बचपन से ही अपने माता-पिता से विरासत में मिला और सिख पंथ के प्रसिद्ध कीर्तनिए भाई समुंद सिंह जी से प्रशिक्षण प्राप्त करके तंती साजों पर कीर्तन गायन करने वाले रागियों की अग्रणी पंक्ति के रागी बनकर उभरे, जिससे अकादमी को भरपूर लाभ मिला।

इस संग्रहालय/अकादमी में 10 वर्ष से लेकर 75 वर्ष तक की आयु के लोग प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्रो. परमजोत सिंह के सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् कीर्तनकार स. सतबीर सिंह, पंजाब एण्ड सिंध बैंक को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई। अक्तूबर 2006 से भक्ति संगीत संग्रहालय का कामकाज अर्बन एस्टेट फेज- I, के प्रथम तल पर स्थानांतरित कर दिया गया था। प्रत्येक संक्रांति पर यहाँ के प्रशिक्षार्थी अकादमी के साथ-साथ बाहर भी कीर्तन करते हैं तथा बैंक की तरक्की के लिए अरदास करते हैं। यह संगीत अकादमी, आँचलिक कार्यालय जालंधर की निगरानी में चल रही हैं। स. सतबीर सिंह संगीत स्नातकोत्तर (एम.ए.) हैं तथा आल इण्डिया रेडियो के प्रतिष्ठित कलाकार भी हैं। यहाँ विद्यार्थियों को गुरु शबद, भजन व तबले का प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान किया जाता है। अब

तक 2235 विद्यार्थी संगीत शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं तथा कई विद्यार्थी स्कूलों, कॉलेजों में संगीत के अध्यापक पद पर भी कार्यरत हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक द्वारा स्थापित यह भक्ति संगीत संग्रहालय न केवल आर्थिक रूप से पिछड़े ज़रूरतमंद बच्चों को रोज़गार देने में सहायक हो रहा है बल्कि भजन-कीर्तन की शिक्षा देकर सिख धर्म के अलावा अन्य धर्म के लोगों को भी बैंक के साथ जोड़ रहा है।

स. सतबीर सिंह

भक्ति संगीत संग्रहालय, अर्बन एस्टेट फेज– I, जालंधर

प्रिय पाठक,

'राजभाषा अंकुर' के इस विशेषांक के माध्यम से बैंक की 105 वर्ष की विकास यात्रा, जिसमें बैंक की स्थापना (1908) इसके संस्थापक, देश–विभाजन के पश्चात् बैंक की स्थिति, राष्ट्रीयकरण से पहले तथा उसके पश्चात् के बैंक का कार्य–व्यापार आदि के बारे में संक्षेप में जानकारी देने का प्रयास किया गया है। 'गागर में सागर' भरने का एक तुच्छ प्रयास है, हो सकता है कि इस अंक में समाहित सामग्री आदि में कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत अवश्य कराएं।

– मुख्य संपादक

बैंक द्वारा आयोजि

त कीर्तन - दरबार

गुरुद्वारा बंगला साहिब
हर वर्ष लगाई जाने वाली

के प्रांगण में बैंक द्वारा चित्र - पुस्तक प्रदर्शनी

बैंक द्वारा संचित सिख सांस्कृतिक धरोहर

(चित्रों के माध्यम से)

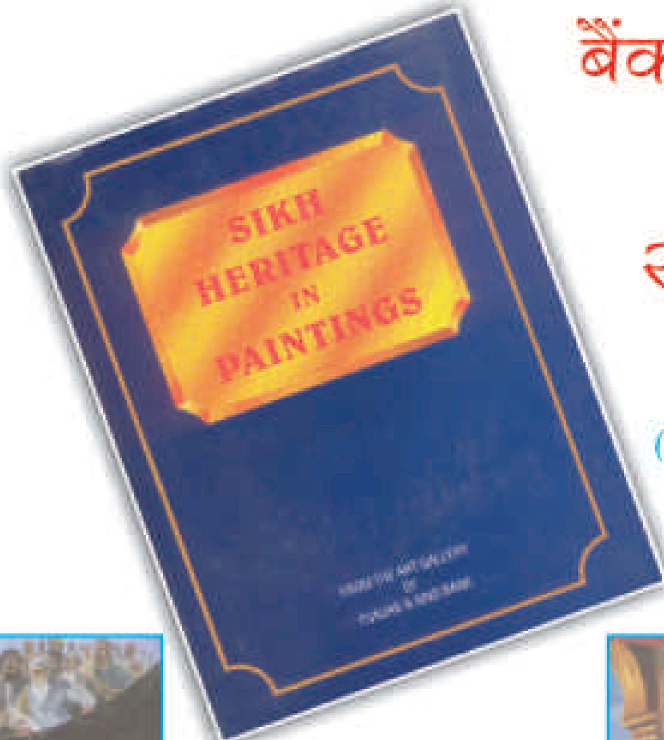

भाई मंज जी लंगर के लिए ले जाई जा रही लकड़ियों को भीगने से बचाते हुए।

भक्ति व शक्ति के पुंज बाबा बुड्ढा जी।

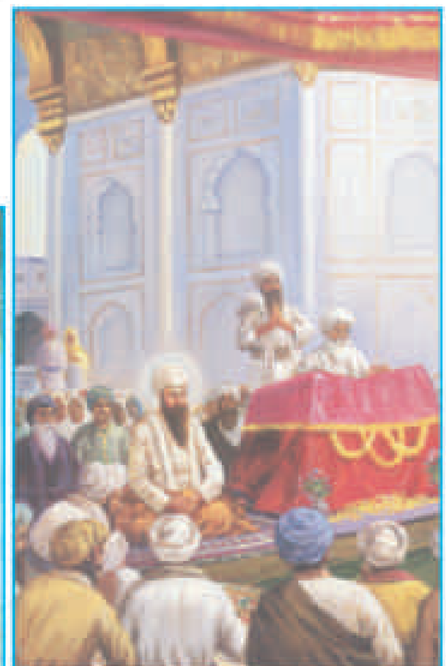

1604 ई. में श्री हरिमंदिर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश उत्सव।

श्री गुरु नानक देव जी सुल्तानपुर में मोदीखाने का कारोबार सम्भालते हुए।

श्री गुरु अंगद देव जी की धर्मपत्नी माता खीवी जी लंगर तैयार करते हुए।

महारानी झालीबाई को भगत रविदास जी, भौतिक पदार्थों की निरर्थकता बताते हुए।

श्री गुरु नानक देव जी के रूहानी चेहरे पर सर्प छाया करते हुए।

प्रभु महिमा बख़ान करते हुए महान सूफ़ी संत बाबा फ़रीद।

सती प्रथा के विरुद्ध उपदेश देते हुए श्री गुरु अमरदास जी।

बैंक द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर

(यहाँ पर कुछ अति विशिष्ट कैलेण्डरों की जानकारी प्रस्तुत है)

वर्ष 1992 के कैलेण्डर का विमोचन करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री एस. डी. नैय्यर, बैंक अधिकारी व बैंक के निदेशक।

वर्ष 1999 के कैलेण्डर का विमोचन करते हुए सरदार एस. एस. कोहली, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री बी. डी. नारंग, कार्यकारी निदेशक एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

वर्ष 2005 का कैलेण्डर का विमोचन करते हुए भाई जसबीर सिंह, 'खालसा' खन्ने वाले एवं बैंक के उच्चाधिकारीगण।

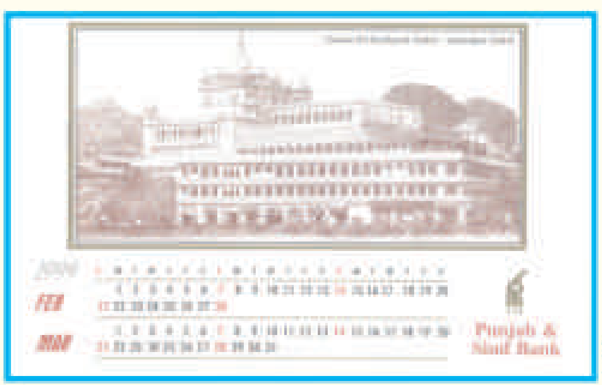

वर्ष 1997 के कैलेण्डर का विमोचन करते हुए सरदार मंजीत सिंह, जत्थेदार अकाल तख़्त साहिब, जत्थेदार अवतार सिंह हित, प्रधान, दिल्ली सिख गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं सरदार मक्खन सिंह।

तात्कालीन् वित्त-मंत्री, भारत सरकार श्री यशवंत सिन्हा, वर्ष 2001 का कैलेण्डर **''निसचै कर अपनी जीत करों''** का विमोचन करते हुए। साथ में हैं कार्यकारी निदेशक सरदार एम. एस. कपूर व बैंक के अन्य उच्चाधिकारीगण।

पैन एवं इंक पेंटिंग्स व टेबल कैलेण्डर

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित गुरु-पर्व

विशिष्ट उपलब्धियाँ

बैंक के 75वें स्थापना दिवस पर आयोजित कीर्तन - दरबार में सरदार औतार सिंह बग्गा (अ.प्र.नि.) रागी सिंहों को सिरोपा प्रदान करते हुए।

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी द्वारा बैंक की 600वीं शाखा के उद्घाटन अवसर पर बैंक द्वारा 600 विकलांगों को ऋण दिए गए तथा आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़ की स्थापना की गई।

सरदार गुरदीप सिंह रंधावा, उप कुलपति, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर, सरदार औतार सिंह बग्गा को सम्मानित करते हुए।

सरदार प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री पंजाब एवं सरदार एस. एस. कोहली (अ.प्र.नि.) द्वारा पी.एस.बी. जमींदारा कार्ड का शुभारम्भ। साथ में हैं सरदार हरचरण सिंह (महाप्रबंधक)।

विशिष्ट उपलब्धियाँ

श्री विजय कपूर, माननीय उप-राज्यपाल दिल्ली, प्रस्तावित स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज केंद्र, रोहिणी (दिल्ली) का शिलान्यास करते हुए।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री के. आर. नारायणन, बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सरदार एस. एस. कोहली सहित अन्य माननीय सदस्य, राष्ट्रपति भवन में कैंसर डाक - टिकट जारी करते हुए।

माननीय पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सरदार एस. एस. कोहली, (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक) एवं अन्य उच्च अधिकारी कारगिल युद्ध के लिए बैंक की ओर से 51 लाख रुपये का चैक प्रस्तुत करते हुए।

सरदार एस. एस. कोहली, (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक) एवं श्री बी. डी. नारंग, (कार्यकारी निदेशक) बैंक की ओर से उड़ीसा तूफान से पीड़ित लोगों के सहायतार्थ 51 लाख रुपये का एक चैक श्री हेमनन्दा बिसवाल, माननीय मुख्यमंत्री उड़ीसा को प्रस्तुत करते हुए।

बैंक द्वारा आयोजित सहस्त्राब्दि के मानव देख-रेख पुरस्कार कार्यक्रम के अवसर पर श्री बी. डी. नारंग (कार्यकारी निदेशक) दिल्ली की मुख्यमंत्री, श्रीमती शीला दीक्षित का स्वागत करते हुए।

बैंक द्वारा प्रकाशित सचित्र गुरु गाथाएं

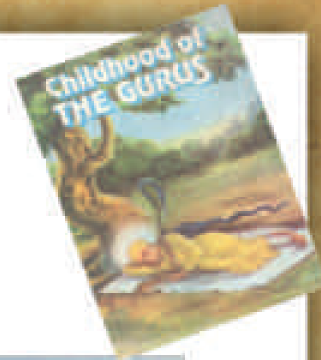

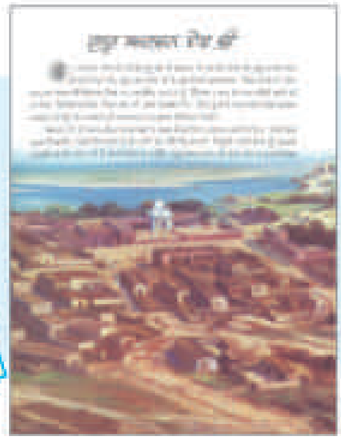

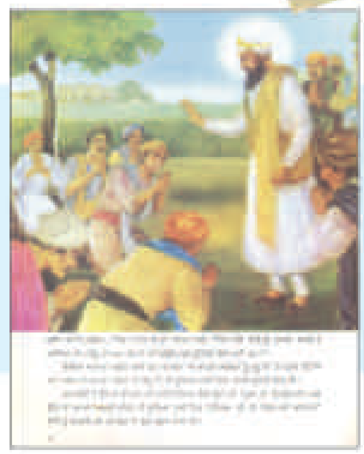

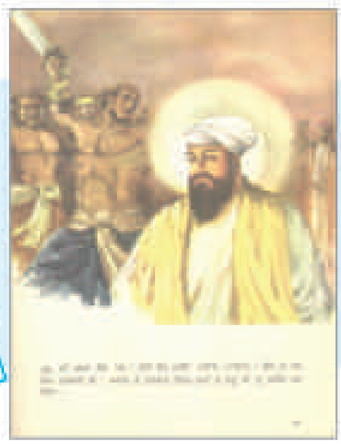

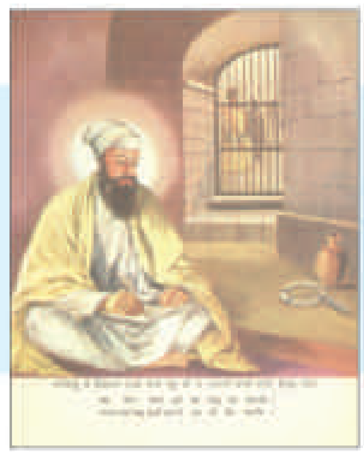

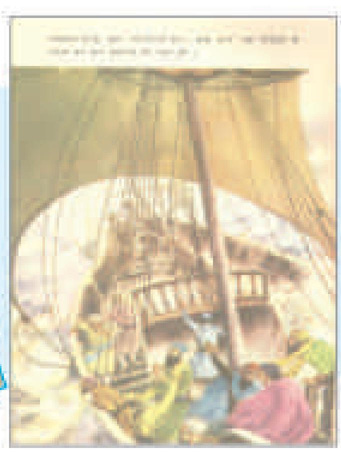

पंजाब एण्ड सिंध बैंक - ग्रामीण स्व-रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान एवं ऋण - वितरण

सिलाई व कढ़ाई प्रशिक्षण प्राप्त करती लाभार्थी महिलाएं।

टाई एण्ड डाई का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए ऋण लाभार्थी।

केश-सज्जा प्रशिक्षण लेते हुए महिला लाभार्थी।

ग्रामीण स्वरोज़गार योजनाओं को कारगर ढंग से चलाने के लिए विशेषज्ञों से चर्चा करते हुए बैंक अधिकारी।

महिलाओं के वस्त्र तैयार करने वाले समूह के साथ एक सफल उद्यमी अपने अनुभव बताती हुई।

डेयरी फॉर्मिंग समारोह में पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री टी. एस. मक्कड़।

बिजली की मोटर बनाने तथा पम्प सैट तैयार करने वाले समूह के साथ अतिथि संकाय चर्चा करते हुए।

मोगा में नाबार्ड द्वारा प्रायोजित स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान के मुख्य परियोजना समन्वयक व अतिथिगण।

बैंक के सतर्कता अधिकारियों हेतु सी.बी.आर.टी., चण्डीगढ़ में दिनांक 26.04.2013 को आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

श्री एम. जी. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी सहभागियों को संबोधित करते हुए।

श्री जे. एल. नेगी, महाप्रबंधक (आर.बी.आई.) सहभागियों से सतर्कता संबंधित विषयों पर चर्चा करते हुए।

प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग, नई दिल्ली द्वारा सी.बी.आर.टी., चण्डीगढ़ में दिनांक 26.04.2013 को प्र. का. सतर्कता तथा धोखाधड़ी निगरानी विभाग में कार्यरत अधिकारियों, स्थानीय प्रधान कार्यालय, चण्डीगढ़ तथा इसके नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले आंचलिक कार्यालयों के सतर्कता अधिकारियों हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें सतर्कता प्रबंधन में हो रहे नए विकास, बैंक में हो रही अनियमितताओं व भ्रष्टाचार तथा धोखाधड़ी की घटनाओं को समाप्त करने के विषय पर चर्चा की गई। श्री एम. जी. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने निकट भविष्य में धोखाधड़ी के मामलों में हो रही बढ़ोतरी पर रोक हेतु विशेष ज़ोर देते हुए सहभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी संस्था में भविष्य में ऐसे मामलों को रोकने हेतु सतर्कता तंत्र में सतर्कता अधिकारी उसका महत्वपूर्ण तथा अपरिहार्य अंग हो गए हैं। उन्होंने क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के अनियमित प्रयास तथा धोखाधड़ी के कृत्यों को समाप्त करने के तरीकों तथा संगठन में भ्रष्टाचार को हटाने की आवश्यकता पर महत्वपूर्ण चर्चा की।

श्री जे. एल. नेगी, महाप्रबंधक (आर.बी.आई.) जो सी.बी.आई. - मुख्यालय, नई दिल्ली में बैंक तथा वित्तीय संस्थानों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, ने भी आर्थिक अपराधों तथा सी.बी.आई. से संबंधित विषयों पर हुए नए परिवर्तनों के बारे में जानकारी दी। श्री आई. एस. भाटिया, महाप्रबंधक (स्थानीय प्रधान कार्यालय) ने भी हाल ही में चण्डीगढ़ में हुए धोखाधड़ी के बारे में अपने विचार व्यक्त किए तथा बैंक में बढ़ते धोखाधड़ी के मामलों के लिए चिंता प्रकट की। पूरे देश में पदस्थ सभी सतर्कता अधिकारियों, स्थानीय प्रधान कार्यालय, चण्डीगढ़ के अंतर्गत आने वाले आंचलिक कार्यालयों के संबंधित अधिकारियों तथा प्र. का. धोखाधड़ी निगरानी विभाग से संबंधित अधिकारियों ने इस कार्यशाला में सहभागिता की।

कार्यशाला में भाग लेते हुए देश के विभिन्न स्थानों पर पदस्थ सतर्कता अधिकारी।

गुरूवार, 30 दिसम्बर, 2010
पंजाब एण्ड सिंध बैंक के इतिहास का एक अविस्मरणीय एवं स्वर्णिम अध्याय

मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज में पंजाब एण्ड सिंध बैंक सूचीबद्ध होने पर बैंक के कार्यकारी निदेशक, श्री पी. के. आनन्द, तात्कालीन महाप्रबंधक, श्री एच. एस. मक्कड़ एवं श्री जी. एस. अरोड़ा महाप्रबंधक पारम्परिक घण्टा ध्वनित कर हर्ष व्यक्त करते हुए।

राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित बैंक के हॉकी खिलाड़ी/कोच

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से **''अर्जुन अवार्ड''** प्राप्त करती हुई श्रीमती राजबीर कौर।

महामहिम राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन से **''अर्जुन अवार्ड''** प्राप्त करते हुए श्री बलजीत सिंह सैनी।

महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से **''मेजर ध्यान चंद अवार्ड''** प्राप्त करते हुए सरदार राजिन्द्र सिंह, ओलंपियन।

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल से **''द्रोणाचार्य अवार्ड''** प्राप्त करते हुए सरदार राजिन्द्र सिंह, ओलंपियन।

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से **''मेजर ध्यान चंद अवार्ड''** से पुरस्कृत होते हुए श्री गुनदीप कुमार।

खेल - जगत में बैंक की उपलब्धियाँ

खेल - जगत में बैंक की उपलब्धियाँ

बैंक की खेल जगत को देन - ओलम्पियंस

सरदार राजिन्द्र सिंह
(1984 लास एंजेल्स)

श्री गुनदीप कुमार
(1988, सिओल)

श्री संजीव कुमार
(1996 अटलांटा)

श्री एलोसियस एडवर्ड
(1996, अटलांटा)

सरदार बलजीत सिंह सैनी
(1996 एवं 2000 अटलांटा एवं सिडनी)

हमारे अंतर्राष्ट्रीय अम्पायर

श्री भूपिन्द्र सिंह

श्री सुरेश ठाकुर